रजत जयंती वर्ष

पढ़ें देवभूमि के सब परिवार, जगे देशभक्ति मिले संस्कार www.matrivandana.org

अहर्निशं जागरणीयम् लोकहितं मम करणीयम्

मातृवन्दना

भाद्रपद-आश्विन, कलियुगाब्द 5120, सितम्बर 2018

विनम्र श्रद्धांजलि

अटल बिहारी वाजपेयी

1924–2018

मूल्य 10/- प्रति

विकास की राह पर शिखर की ओर हिमाचल

हिमाचल प्रदेश में
माननीय मुख्यमंत्री
श्री जयराम ठाकुर
के दूरदर्शी कुशल नेतृत्व में आरम्भ
जनमंच
मुख्यमंत्री स्वावलम्बन योजना
हिमाचल गृहिणी सुविधा योजना
से प्रदेशवासी हो रहे लाभान्वित

जन मंच – जनता का मंच

अपनी शिकायत दर्ज करने के लिए Logon करें
www.himachal.nic.in/e-samadhan

- प्रत्येक माह विधानसभा क्षेत्रवार जन मंच का आयोजन।
- जनता की समस्याओं के समाधान में पारदर्शी एवं सार्थक क़दम।
- सभी मन्त्री नियमित रूप से हर ज़िले के दूर–दराज़ क्षेत्रों में 'जन मंच' का आयोजन कर, मौक़े पर लोगों की समस्याओं का कर रहे समाधान।
- ज़िला स्तर पर जन मंच का संचालन संबंधित उपायुक्त कर रहे।
- सभी विभागों के अधिकारी भी उपस्थित रहकर निर्णय लेने तथा शिकायत निवारण में हो रहे सहायक।
- लोगों को समस्याओं के समाधान के लिए सरकारी कार्यालयों में आने जाने के समय व धन की हो रही बचत।
- जन मंच का उद्देश्य वंचित लोगों की शिकायतों को पहचानना और उनका हल करना।

मुख्यमंत्री स्वावलम्बन योजना

मुख्यमंत्री स्वावलम्बन योजना का लाभ प्राप्त करने के लिए प्रार्थी, आधारकार्ड व बोनाफाईड हिमाचल प्रमाण–पत्र के साथ www.emerginghimachal.hp.gov.in पर Online आवेदन कर सकते हैं अथवा निदेशक, उद्योग विभाग अथवा अपने ज़िला में, महाप्रबंधक, ज़िला उद्योग केन्द्र से सम्पर्क कर सकते हैं।

- 18-35 वर्ष आयु वर्ग के हिमाचली युवा होंगे लाभान्वित।
- औद्योगिक विकास के लिए अब तक की सबसे बड़ी योजना।
- युवाओं में उद्यमिता विकास व स्वरोज़गार सृजन की दिशा में एक क्रांतिकारी पहल।
- राज्य के आंतरिक एवं पिछड़े क्षेत्रों में औद्योगीकरण के लिए एक अहम प्रयास।
- राज्य में औद्योगिक इकाईयां स्थापित करने के लिए आर्थिक एवं भूमि संबंधित प्रोत्साहन।
- पूर्णतया राज्य सरकार द्वारा वित्त पोषित।
- वर्ष 2018-19 में 80 करोड़ रूपये का प्रावधान।

हिमाचल गृहिणी सुविधा योजना

हिमाचल गृहिणी–सुविधा योजना का लाभ उठाने के लिए सम्पर्क करें अपने क्षेत्र के सचिव, ग्राम पंचायत अथवा खण्ड स्तर पर निरीक्षक, खाद्य, नागरिक आपूर्ति एवं उपभोक्ता मामले से।

- गृहिणी सशक्तिकरण और पर्यावरण संरक्षण की दिशा में अनुकरणीय पहल।
- योजना के पात्र ऐसे सभी हिमाचली परिवार हैं, जिनके पास अपना या किसी भी सरकारी योजना के तहत घरेलू गैस कनैक्शन नहीं है अथवा प्राकृतिक आपदाओं से प्रभावित परिवार।
- लाभार्थियों का चयन, ग्रामीण क्षेत्र में ग्राम पंचायत तथा शहरी क्षेत्र में शहरी स्थानीय निकाय कर रहे।
- ईंधन लकड़ी ढ़ोने और चूल्हे के धुएं से मिल रहा छुटकारा।
- हो रहा पर्यावरण सरंक्षण, परिवार हो रहे खुशहाल।
- योजना के तहत लाभार्थी परिवार को मिल रहा कुल लगभग 3500 रू. का सामान, जिसमें शामिल है घरेलू गैस का चूल्हा, प्रैशर रैग्यूलेटर, हॉट प्लेट, सुरक्षा पाईप, घरेलू एल.पी.जी. रीफिल का मूल्य और ब्लू बुक।

सूचना एवं जन सम्पर्क विभाग, हिमाचल प्रदेश द्वारा जारी

वसुदेव सुतम देवं कंस चाणूरमर्दनम्।
देवकी सुतं परमानंदम कृष्णं वन्दे जगदगुरूम॥

कृष्ण, वसुदेव और देवकी के पुत्र, इस जगद में सब के स्वामी हैं! वो कंस और चाणूर का अंत करने वाले हैं!
मैं ऐसे स्वामी के आगे शीश नवाता हूँ और उनकी दया और आशीर्वाद की सदा कामना करता हूँ!

वर्ष : 18 अंक : 9

मातृवन्दना

भाद्रपद-आश्विन, कलियुगाब्द 5120, सितम्बर 2018

सम्पादक
डॉ. दयानन्द शर्मा

सह-सम्पादक
वासुदेव शर्मा

✡

सम्पादक मण्डल
दलेल सिंह ठाकुर
डॉ॰ अर्चना गुलेरिया
नीतू वर्मा

✡

वितरण प्रमुख
जय सिंह ठाकुर

✡

प्रबन्धक
महीधर प्रसाद

वार्षिक शुल्क
100 रुपये

कार्यालय
मातृवन्दना
डॉ. हेडगेवार भवन,
नाभा हाउस
शिमला-171 004
दूरभाष : 0177-2836990

e-mail:
www.matrivandana.org
matrivandanashimla@gmail.com

प्रकाशक एवं मुद्रक कमल सिंह सेन द्वारा मातृवन्दना संस्थान के लिए सवितार प्रैस, Pl-820, फेस-2, उद्योग क्षेत्र, चण्डीगढ़ से मुद्रित तथा डॉ. हेडगेवार भवन, नाभा हाउस, शिमला-171004 से प्रकाशित।
सम्पादक: डॉ. दयानंद शर्मा।
वैधानिक सूचना: पत्रिका का सम्पादकीय कार्य पूर्णत: अवैतनिक है। पत्रिका में छपी सामग्री से सम्पादक का सहमत होना जरूरी नहीं। इस सम्बन्ध में किसी भी कार्यवाही का निपटारा शिमला न्यायालय में ही होगा।

हिमाचल को अपना घर मानने वाले अटल आज हमारे मध्य नहीं

काल के कपाल पर नया गीत लिखने वाले, देश की राजनीति के शलाका पुरूष, सम्पूर्ण राष्ट्र के अधिनायक एवं प्रेरणा स्त्रोत, भारतीय जन-मानस के अटल विश्वासपात्र, भारत रत्न भूतपूर्व प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी का भौतिक शरीर आज हमारे मध्य नहीं किन्तु उनकी आत्मा की सर्वव्यापकता देश ही नही विदेशी जगत में भी समाहित है। उनकी अन्तिम यात्रा में राजधानी दिल्ली की सड़कों पर उमड़े जनसैलाब से इस बात की पुष्टि होती है। प्रधानमंत्री सहित पूरे केंद्रीय मंत्रीमण्डल, 26 राज्यों के मुख्यमंत्री, आठ सार्क देशों सहित 20 से अधिक देशों के प्रमुख प्रतिनिधियों ने अन्तिम यात्रा में शामिल होकर वाजपेयी को श्रद्धांजलि अर्पित की।

सम्पादकीय	हिमाचल को अपना घर.....	3
प्रेरक प्रसंग	जब प्रथम राष्ट्रपति राजेन्द्र	4
चिंतन	हारो न हिम्मत बिसारो न	5
आवरण	अटल बिहारी संगठन शिल्पी.....	6
संगठनम्	विश्व संवाद केन्द्र द्वारा वृक्षारोपण	11
देश-प्रदेश	किसान क्रेडिट कार्ड से	12
देवभूमि	गौरवमय संस्कृति को संजोए.....	14
पुण्य जयंती	दीनदयाल उपाध्याय का एकात्म	16
घूमती कलम	शरिया अदालतें: धार्मिक राज्य.....	17
दृष्टि	पौधों को समर्पित किया जीवन.....	20
काव्य जगत	गांव की मिट्टी	21
कृषि	गन्ने की कृषि कर रहे हैं.....	22
स्वास्थ्य	सायं के वक्त अपनाएं ये 2 नुस्खे.....	23
प्रतिक्रिया	राष्ट्रीय नागरिक रजिस्टर यानि.....	24
महिला जगत	मॉरीशस में हिमाचल की साहित्यकार.....	25
समसामयिकी	केरल: सेवा के अग्रिम मोर्चों पर	30
बाल जगत	दक्षिण अफ्रीका में संस्कृत की	31

पाठकीय

सम्पादक महोदय,

मातृवन्दना कश्मीर समस्या से जुड़ी विषय सामग्री प्राय: प्रकाशित करती रहती है इसी सम्बंध में घाटी में इस वर्ष विगत माह सरकार द्वारा संघर्ष विराम का निर्णय लिया गया। प्रश्न यह है कि जब भारतीय सेना द्वारा गोलीबारी को लेकर कभी पहल हुई ही नहीं, तो सीजफायर का क्या मतलब। गत तीन जून को वहीं सीमा सुरक्षाबल के चार जवान शहीद हुए, जबकि एक महीने के अंदर आठ जवानों को शहादत हुई। इसी संघर्ष विराम के दौरान आतंकियों द्वारा सेना पर 57 बार हमलों को अंजाम दिया गया। संदेश साफ है कि सरकारों का सीजफायर का ऐलान पाकिस्तान और आतंकियों को नामंजूर था। मगर दुर्भाग्य से यूएन (यूनाइटेड नेशन) ने भारत सरकार को एक रिपोर्ट भेजी है, जिसमें कश्मीर में मानवाधिकारों के हनन और 'अफस्पा' का मुद्दा उठाया गया है। संयुक्त राष्ट्र संघ को चाहिए कि उसके द्वारा 20 जून को अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर मनाए जाने वाले 'शरणार्थी दिवस' के मौके पर कश्मीर के पांच लाख जबरन विस्थापित किए कश्मीरी पंडितों का मुद्दा उठाकर उनके प्रति अपना रूख स्पष्ट करे, जो कश्मीर के मूल निवासी होने के बावजूद अपने ही देश में शरणार्थी बनकर रहने को मजबूर हैं और यूएन इस बात पर मंथन करे कि आखिर 90 के दशक में घाटी से पलायन क्यों हुआ था। ❖ **प्रताप सिंह पटियाल, बिलासपुर**

महोदय,

अखंड भारत में कभी सात लाख, बत्तीस हजार गुरूकुल विद्यमान थे। अंग्रेजों के आगमन से पूर्व भारत में जनहित की गुरू-शिष्य परंपरा पर आधारित शिक्षा-प्रणाली प्रचलित थी जिसके बल पर भारत सम्पूर्ण विश्व में सोने की चिड़िया के नाम से सर्व विख्यात हुआ था। सन् 1840 ई0 में लार्ड मैकाले की प्रतिवेदन के अनुसार अंग्रेजों ने ब्रिटिश संसद में एक बिल पारित करके भारतीय जनहित की गुरू-शिष्य परंपरा पर आधारित मूल शिक्षा-प्रणाली को भारतवर्ष में सदा के लिए निष्क्रिय कर दिया था। इससे पूर्व अंग्रेजों ने उसके स्थान पर अंग्रेजी साम्राज्य हित में निम्न श्रेणी की एक नई शिक्षा-प्रणाली बलात् थोंप दी थी जो दुर्भाग्यवश स्वाधीन भारतवर्ष में आज भी अपना वर्चस्व बनाए हुए है। लार्ड मैकाले की सोच से प्रभावित और अंग्रेजों द्वारा स्थापित अंग्रेजी साम्राज्य के हित में लागू विशेष शिक्षा-प्रणाली भारत की शैक्षणिक पराधीनता का ही सूचक है। भारत को स्वाधीन हुए अब तक सत्तर वर्ष व्यतीत हो चुके हैं। उसे अब तक स्वदेशी मूल की परंपरागत शिक्षा-प्रणाली स्वीकार कर लेनी चाहिए थी परंतु ऐसा नहीं हुआ। किसी स्वदेशी ने उसकी आवश्यकता ही नहीं समझी। वर्तमान काल में विद्यार्थियों के शिक्षण-प्रशिक्षण में कौन से विषय पढ़ाए जाते हैं? क्या वे सब विद्यार्थियों का भविष्य निर्माण करने के लिए पर्याप्त हैं?क्या उनसे विद्यार्थियों के जीवन का संपूर्ण विकास होता है?उसके लिए उन्हें अन्य कौन से विषय पढ़ाए जा सकते हें? विचार किया जा सकता है। ❖**चेतन कौशल, नूरपुरी**

सितम्बर 2018 के शुभ मुहूर्त

तिथि	नक्षत्र	मुहूर्त
03 सितम्बर सोमवार	रोहिणी	प्रात: 06.03-रात्रि 08.05
03 सितम्बर सोमवार	मृगशीर्ष	रात्रि 08.05-06.04 प्रात:
06 सितम्बर गुरूवार	पुनर्वसु	प्रात: 06.05-03.14 रात्रि
06 सितम्बर गुरूवार	पुष्य	03:14 रात्रि-06.05 प्रात:
09 सितम्बर रविवार	उत्तरा फाल्गुनी	05:41 प्रात:-06.07 प्रात:
14 सितम्बर शुक्रवार	अनुराधा	01:27 प्रात:-06.09 प्रात:
16 सितम्बर रविवार	मूल	04:55 प्रात:-06:10 प्रात:
21 सितम्बर शुक्रवार	श्रावण	06:12 प्रात:-04:46 रात्रि
25 सितम्बर मंगलवार	उत्तराभाद्रपद	06:14 प्रात:-01:01 प्रात:
27 सितम्बर गुरूवार	अश्विनी	06:15 प्रात:-02:23 प्रात:
29 सितम्बर शनिवार	रोहिणी	02.14 प्रात:-06:16 प्रात:

शिकायत व सुझाव के लिए सम्पर्क करें अथवा लिखें
0177-2836990, 7650000990
ई-मेल: matrivandanashimla@gmail.com

सभी सुधी पाठकों व विज्ञापनदाताओं को श्री कृष्णजन्माष्टमी, शिक्षक दिवस, ऋषि पंचमी व पराशर जयंती की हार्दिक शुभकामनाएं।

स्मरणीय दिवस (सितम्बर)

जन्माष्टमी	03 सितम्बर
अजा एकादशी	04 सितम्बर
शिक्षक दिवस	05 सितम्बर
अजा एकादशी	06 सितम्बर
हरितालिका तीज	12 सितम्बर
ऋषि पंचमी पराशर उत्सव	14 सितम्बर
पद्मा एकादशी	20 सितम्बर
मुहर्रम	21 सितम्बर
श्राद्ध आरम्भ	24 सितम्बर

हिमाचल को अपना घर मानने वाले अटल आज हमारे मध्य नहीं

काल के कपाल पर नया गीत लिखने वाले, देश की राजनीति के शलाका पुरूष, सम्पूर्ण राष्ट्र के अधिनायक एवं प्रेरणा स्त्रोत, भारतीय जन-मानस के अटल विश्वासपात्र, भारत रत्न भूतपूर्व प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी का भौतिक शरीर आज हमारे मध्य नहीं किन्तु उनकी आत्मा की सर्वव्यापकता देश ही नही विदेशी जगत में भी समाहित है। उनकी अन्तिम यात्रा में राजधानी दिल्ली की सड़कों पर उमड़े जनसैलाब से इस बात की पुष्टि होती है। प्रधानमंत्री सहित पूरे केंद्रीय मंत्रीमण्डल, 26 राज्यों के मुख्यमंत्री, आठ सार्क देशों सहित 20 से अधिक देशों के प्रमुख प्रतिनिधियों ने अन्तिम यात्रा में शामिल होकर वाजपेयी को श्रद्धांजलि अर्पित की। सन् 2009 से सार्वजनिक जीवन से दूर और अस्वस्थता के कारण तन्हाई के अंधेरे में गुम रह कर भी उनके नाम और काम की गूंज कभी कम नहीं हुई। उनका व्यक्तित्व व कर्तव्य इतना विशाल व बेमिसाल था कि मतभेद रखने वाले राजनेताओं और विपक्षी दलों से मनभेद कभी नहीं रहा। यही कारण है कि उनकी स्वीकार्यता एवं लोकप्रियता सर्वत्र एवं सर्वदा बनी रही। राजनीति में निष्णात, सफल एवं लोकप्रिय राजनेता प्रखर एवं ओजस्वी वक्ता, उत्कृष्ट कवि व पत्रकार अटल बिहारी वाजपेयी निश्चय से बहुमुखी प्रतिभा के धनी थे। उनकी कई कविताएं उनके व्यक्तित्व की परिचायक बन गई थी। वह कभी कहीं भी किसी के समक्ष झुके नहीं। विषम परिस्थितियों का उन्होंने डट कर मुकाबला किया। न तो सत्ता के लिए और न ही पद के लिए उनकी लालसा रही। सदैव अटल रहे। यह उनके व्यक्तित्व की विशेषता थी कि सत्ता में रहते हुए उन्होंने न तो अभिमान किया और न ही सत्ता से दूर रहते अपना स्वाभिमान छोड़ा। मई सन् 1999 में प्रधानमंत्री पद के कार्यकाल में वैश्विक दवाब के बावजूद पोखरण परमाणु विस्फोट किया। मैत्री-वार्ता को अस्वीकार करने वाले पाकिस्तान को कारगिल युद्ध में करारी हार दी। चार बड़े शहरों को हाईवे नैटवर्क से जोड़ने वाली स्वर्णिम चतुर्भुज योजना का आगाज किया। ग्रामीण क्षेत्रों के लिए प्रधानमंत्री सड़क योजना मील का पत्थर साबित हुई।

वाजपेयी की सबसे बड़ी उपलब्धियों में उनकी महत्वाकांक्षी सड़क परियोजनाओं, स्वर्णिम चतुर्भुज और प्रधानमंत्री ग्राम सड़क योजना को सबसे ऊपर रखा जाता है। स्वर्णिम चतुर्भुज योजना के चेन्नई, कोलकाता, दिल्ली और मुम्बई को हाईवे नेटवर्क से कनैक्ट किया, जबकि प्रधानमंत्री ग्राम सड़क योजना के तहत गांवों को पक्की सड़कों के जरिए शहरों से जोड़ा गया। ये योजनाएं सफल रहीं और देश के आर्थिक विकास में मदद मिली। अटल बिहारी वाजपेयी ने बिजनैस और इंडस्ट्री में सरकार की भूमिका कम की। इसके लिए उन्होंने अलग से विनिवेश मंत्रालय बनाया। सबसे महत्वपूर्ण फैसला भारत एल्यूमीनियम कम्पनी (बाल्को) और हिन्दुस्तान जिंक, इंडिया पैट्रोकैमीकल्स कॉर्पोरेशन लिमिटेड तथा वी.एस.एन.एल. में विनिवेश का था। वाजपेयी की इन पहलों में भविष्य में सरकार की भूमिका तय हो गई।

हिमाचल के प्रति उनका प्रेम अविस्मरणीय रहेगा। हिमाचल को उन्होंने अपना दूसरा घर माना। मनाली के प्रीणी गाँव में हिमाचल के वासी बनकर उन्होंने इस प्रदेश को गौरवान्वित किया है। उनके सत्ता में रहते हुए हिमाचल को विशेष आर्थिक योगदान प्राप्त हुआ है। कई नई योजनाओं के साथ-साथ रोहतांग सुरंग उनकी देन है। अस्तु, अटलजी जिस राजनीतिक-सामाजिक चेतना के प्रतिनिधि हैं उसके आधार अपनी समग्रता व मूल में कहीं-न-कहीं राष्ट्रीय जागरण से संबंधित राष्ट्रीय, सामाजिक, सांस्कृतिक व राजनीतिक मूल्य हैं। निश्चयत: भारतीय राष्ट्रीय जागरण के विशिष्ट प्रभावों में वे उस मलय समीर को भीतर लाते हैं जो हमारी मानवीय चेतना की मूल्यवान दृष्टि है तथा जो संकुचित मानसिकता व आचरण का परित्याग करके प्रवृत्ति के साथ हर अन्याय के विरूद्ध खड़े होने की विवेकानंदी चेतना को रेखांकित करती है। हिमाचल वासी आज उनसे बिछुड़कर स्वयं को असहाय महसूस कर रहे हैं और सच्चे हृदयों से उनको श्रद्धांजलि अर्पित करते हैं।

दीप से दीप जलाओ

ईश्वर चन्द्र विद्यासागर कलकत्ता में अध्यापन कार्य करते थे। वेतन का उतना ही अंश घर परिवार के लिए खर्च करते जितने में कि औसत नागरिक स्तर का गुजारा चल जाता। शेष भाग वे दूसरे जरूरतमंदों की, विशेषत: छात्रों की सहायता में खर्च कर देते थे।आजीवन उनका यही व्रत रहा। वे गरीबी में पढ़े थे ओर निर्धनों के लिए आवश्यकताएँ पूरी करने में लगा देते। एक दिन वे बाजार में चले जा रहे थे। एक हताश युवक ने भिखारी की तरह उनसे एक पैसा माँगा। विद्यासागर दानी तो थे पर सत्पात्र की परीक्षा किये बिना किसी की ठगी में न आते। युवक से जवानी में हट्टे-कट्टे होते हुए भी भीख माँगने का कारण पूछा। सारी स्थिति जानने पर माँगने का औचित्य लगा। सो एक पैसा तो दे दिया पर उसे रोककर उससे पूछा कि यदि अधिक मिल जाय तो क्या करोगे? युवक ने कहा कि यदि एक रुपया मिले तो उसका सौदा लेकर गलियों में फेरी लगाने लगूंगा ओर अपने परिवार का पोषण करने में स्वावलम्बी हो जाऊंगा। विद्यासागर ने एक रुपया उसे ओर दे दिया। उसे लेकर उसने छोटा व्यापार आरंभ कर दिया। काम दिन व दिन बढ़ने लगा। कुछ दिनों में वह बड़ा व्यापारी बन गया।

एक दिन विद्यासागर उस रास्ते से निकल रहे थे कि व्यापारी दुकान से उतरा उनके चरणों में पड़ा ओर दुकान दिखाने ले गया और कहा-यह आपकी दी हुई एक रुपया पूंजी का चमत्कार है। विद्यासागर प्रसन्न हुए और कहा जिस प्रकार तुमने सहायता प्राप्त करके उन्नति की उसी प्रकार का लाभ अल्प जरूरतमंदों को भी देते रहना। पात्र उपकरण लेकर ही निश्चिंत नहीं हो जाना चाहिए वरन् वैसा ही लाभ अन्य अनेकों को पहुंचाने के लिए समर्थता की स्थिति में स्वयं कभी उदारता बरतनी चाहिए। व्यापारी ने वैसा ही करते रहने का वचन दिया। ❖

जब प्रथम राष्ट्रपति राजेंद्र प्रसाद ने अपने नौकर से मांगी माफी

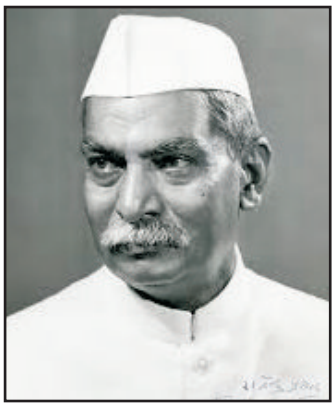

राष्ट्रपति भवन बारह वर्षों के लिए राजेन्द्र प्रसाद का घर था। उसकी राजसी भव्यता और शान सुरुचिपूर्ण सादगी में बदल गई थी। राष्ट्रपति का एक पुराना नौकर था, तुलसी। एक दिन सुबह कमरे की झाड़पोंछ करते हुए उससे राजेन्द्र प्रसाद जी के डेस्क से एक हाथी दांत का पेन नीचे जमीन पर गिर गया। पेन टूट गया और स्याही कालीन पर फैल गई। राजेन्द्र प्रसाद बहुत गुस्सा हुए। यह पेन किसी की भेंट थी और उन्हें बहुत ही पसन्द थी। तुलसी आगे भी कई बार लापरवाही कर चुका था। उन्होंने अपना गुस्सा दिखाने के लिये तुरन्त तुलसी को अपनी निजी सेवा से हटा दिया।

उस दिन वह बहुत व्यस्त रहे। कई प्रतिष्ठित व्यक्तिऔर विदेशी पदाधिकारी उनसे मिलने आये। मगर सारा दिन काम करते हुए उनके दिल में एक कांटा सा चुभता रहा था। उन्हें लगता रहा कि उन्होंने तुलसी के साथ अन्याय किया है। जैसे ही उन्हें मिलने वालों से अवकाश मिला राजेन्द्र प्रसाद ने तुलसी को अपने कमरे में बुलाया। पुराना सेवक अपनी गलती पर डरता हुआ कमरे के भीतर आया। उसने देखा कि राष्ट्रपति सिर झुकाये और हाथ जोड़े उसके सामने खड़े हैं। उन्होंने धीमे स्वर में कहा,

'तुलसी मुझे माफ कर दो।'

तुलसी इतना चकित हुआ कि उससे कुछ बोला ही नहीं गया। राष्ट्रपति ने फिर नम्र स्वर में दोहराया,

तुलसी, 'तुम क्षमा नहीं करोगे क्या?

इस बार सेवक और स्वामी दोनों की आंखों में आंसू आ गये।' ❖

हारो न हिम्मत बिसारो न राम को

प्रभु को कभी न भूलना, यही सार बात है। भगवान को हृदय से पुकारते हुए संसार के सभी कार्य करो। उनका स्मरण, मनन, नाम-जप, प्रार्थना सब करते रहो। प्रत्येक कार्य का एक निर्धारित समय रहता है, वैसे ही ाागवान को भी पुकारते रहो, अपनी दिनचर्या से उन्हें जोड़ लो। संसार में शांति से रहने का यही उपाय है। मनुष्य का मन बहुत चालबाज है, वह कई बहाने बनाता रहता है। हमें मन की इस चालबाजी से बचना चाहिए। दृढ़तापूर्वक न चाहते हुए भी, मन लगे, चाहे न लगे, संसार के कार्यों को करते हुए, अपने व्यस्त जीवन में भी भगवान का नाम लेने की आदत डालनी चाहिए। मन में दो प्रकार की मुख्य वृत्तियां रहती हैं। पहला प्रेम और दूसरी घृणा। जिसके प्रति प्रेम रहता है, उसकी हमेशा याद आती रहती है। जिसके प्रति घृणा रहती है, उसकी हम उपेक्षा करते हैं। इसलिए हमें भगवान से प्रेम करना चाहिए और भगवान से विमुख करने वाले विषयों से घृणा कर उनकी उपेक्षा करनी चाहिए। भगवान का नाम लेने के लिए हमारे पास 24 घंटे हैं। हमको अपनी शक्ति के अनुसार नाम लेना चाहिए। संसार का अनुभव हमारा अनन्त जन्मों का है। हमें उसके अनुभव की आवश्यकता नहीं है। लेकिन भगवान का नाम लेने के लिए हमें पुरूषार्थ करके नाम-स्मरण की आदत डालनी है। हम सब श्रीमां की संतान हैं। उनकी कृपा सब पर सदा बरस रही है।

महामाया कृपा कर अनित्यता का बोध करा देंगी और संसार के बंधन काट देंगी। मन में अच्छे भावों का संस्कार डालना, भगवान के नाम का संस्कार डालना, इस जन्म की कमाई है। अच्छे संस्कारों से भगवान में रूचि पैदा होगी। इससे स्थायी संस्कार मन में बन जाता है, ये हमारी स्थायी सम्पत्ति है। संसार के अधिकांश लोग केवल अपनी ही चिंता करते हैं, स्वार्थी हो जाते हैं। किन्तु सज्जन गृहस्थ लोग और साधु-संत दूसरों की सेवा करते हैं। साधक को बीच-बीच में तीर्थाटन भी करना चाहिए। तीर्थों में भगवान का विशेष प्रकाश होता है। अशुद्ध मन लेकर तीर्थ में नहीं जाना चाहिए। हमें शुद्ध मन से तीर्थ में जाना चाहिए और मन की शुद्धि के लिए तीर्थ-देवता से प्रार्थना करनी चाहिए। हमें ऐसा करना चाहिए कि हमारा घर, हमारा मन ही तीर्थ बन जाए। भगवान के यहां गृहस्थ और सन्यासी का भेद नहीं है। वे तो प्रेम देखते हैं। हमारा प्रेम कहां है, यह महत्वपूर्ण है। सहनशीलता के अभाव में साधक के मन में बहुत-से विक्षेप होते रहते हैं। सहनशीलता के अभाव में लड़ाई-झगड़े होते रहते हैं। वह छोटी-छोटी घटनाओं से चिढ़ जाता है। उससे उसके मन में विक्षोभ होता है और वह भगवान के पथ से च्युत हो जाता है। श्रीरामकृष्ण देव कहते थे - ''जो सहता है, वह रहता है, जो नहीं सहता, उनका नाश हो जाता है।'' इसलिए हमें सहनशील होना चाहिए। सहनशीलता गृहस्थ और सन्यासी दोनों के लिए बहुत आवश्यक है। साधक को कभी भी किसी की निन्दा नहीं करनी चाहिए। निन्दा करने से परिवार-पड़ोस और समाज में विघटन होता है। परनिन्दा सबसे बड़ा पाप है। यह साधक-जीवन में विषतुल्य है। इससे सबको बचना चाहिए। मन से लड़ने से कोई मन को जीत नहीं सकता। मन को बच्चे के जैसा समझना चाहिए। उसे सद्विचारों से सदाचार का प्रशिक्षण देना चाहिए। मन खाली रहने से नीचे जाता है। इसलिए मन को हमेशा सत्कर्म और सद्भाव में लगाए रखें। हम जो सोचते हैं, वही बन जाते हैं। इसलिए सदा शुभ मंगलमय संकल्प लें। सत्संग करने से मन ऊपर उठता है। ईश्वर में लगता है। ईश्वर की सहायता जब मिलती है, तब हम जीवन में सफल होते हैं। ईश्वर की कृपा से ही उनकी अनुभूति होती है। ईश्वर मंगलमय हैं, वे जो कुछ भी करते हैं, हमारे कल्याण के लिए ही करते हैं। ऐसा विश्वास कर हमें प्रत्येक परिस्थिति में ईश्वर पर श्रद्धा-भक्ति करते रहना चाहिए। ❖

अटल बिहारी वाजपेयी: संगठन शिल्पी, सफल प्रशासक एवं दूर-द्रष्टा

-डॉ. सुरेश कुमार सोनी

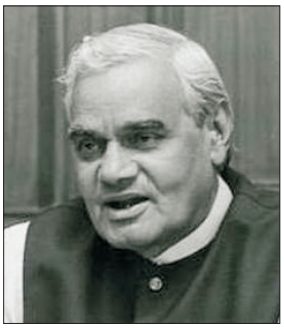

संसार और समाज निरंतर गतिमान है। जो आज है कल शायद नहीं होगा, व्यक्ति आज है कल शायद हो न हो परन्तु समाज व्यक्ति को उसके कृर्तत्व से पहचानता है। अटल बिहारी वाजपेयी एक दशक से ज्यादा डेमेंसिया में रहकर अगस्त 16 अगस्त 2018 को परलोक सिधार गए। सबकी आंखें नम हो गयीं और पूरा देश उनको भावपूर्ण श्रद्धांजलि के साथ दिल से नमन कर रहा था। सभी राजनीतिक दलों के नेताओं ने वाजपेयी के संस्मरणों को याद कर उनकी भूरी भूरी प्रशंसा की, शव यात्रा में सम्पूर्ण भारत से उमड़ी भीड़ वाजपेयी के व्यक्तित्व का परिचय दे रही थी। सब साथ चल रहे थे परन्तु ऐसे विराट व्यक्तित्व की अनुभूति कर शायद अपने को भी टटोल रहे होंगे।

डॉ. श्यामा प्रशाद मुखर्जी और दीनदयाल उपाध्याय जनसंघ को धार देने में लग गए। अटल बिहारी वाजपेयी भी उनके साथ परिश्रम में लग गए। श्यामा प्रसााद मुखर्जी और दीन दयाल उपाध्याय की अकाल मृत्यु के बाद यह सब कार्य वाजपेयी और उनकी टीम ने संभाल लिया। विपक्ष कांग्रेस से संघर्ष कर रहा था। आपातकाल के बाद विपक्ष वैचारिक मतभेद भुला कर जनता पार्टी का गठन कर कांग्रेस और आपातकाल का विरोध कर प्रखर जनमत निर्माण में लग गया। जनसंघ का विघटन हो गया। 1977 में जनता पार्टी की सरकार बन गयी, अटल बिहारी वाजपेयी की इस समय विदेश मंत्री के रूप में भूमिका असरदार रही। संयुक्त राष्ट्र की महासभा में उन्होंने हिंदी में भाषण देकर भारत का मूल परिचय दिया।

भारतीय जनता पार्टी की स्थापना कांग्रेस के विकल्प के रूप में 1980 में हुई। अटल बिहारी वाजपेयी इसके संस्थापक अध्यक्ष बने। 1984 में भारतीय जनता पार्टी की लोक सभा में केवल 2 सीटें आईं। तत्कालीन परिस्थितियाँ सहानुभूति से प्रभावित थीं क्योंकि इंदिरा गाँधी की निर्मम हत्या के बाद पूरा देश शोकाकुल था, चुनाव परिणाम जिसमें कांग्रेस को ऐतिहासिक सर्वाधिक जनादेश प्राप्त हुआ और राजीव गाँधी के प्रति जबरदस्त सहानुभूति सपष्ट देखी गयी। अटल बिहारी वाजपेयी के संकल्प को उनकी कविता की पंक्तियाँ 'हार नहीं मानूँगा' दृढ़ कर रही थीं और वो 'काल के कपाल पर नयी गाथा लिखने, 'अँधेरा छटेगा सूरज निकलेगा' इस विश्वास से दृढ़ निश्चय के साथ संगठन को धारदार बनाने में लग गए। संगठन शिल्पी अटल बिहारी वाजपेयी ने भारतीय जनता पार्टी को सत्ता के मुकाम पर पहुंचा दिया। वाजपेयी NDA गठबंधन के नेता और प्रधानमंत्री बन गए। चुनौतियों ने घेरे रखा, 13 दिन उसके बाद 13 महीने तदोपरांत लगभग 5 वर्ष तक प्रधानमंत्री रहकर इतिहास को पलट दिया क्योंकि यह पहले नॉन कांग्रेस प्रधानमंत्री थे जो टर्म पूर्ण कर पाए।

भारत के लोकतंत्र में यह एक नया युग था। यह काल उनके लिए बेहद चुनौतीपूर्ण था 26 दलों का गठबंधन, दलों की महत्वाकांक्षाएं, गठबंधन धर्म, राजधर्म तथा सरकार का सफल संचालन करना अपने आप में ही चुनौतीपूर्ण था। 1999 के परमाणु बिस्फोटों के बाद अंतर-राष्ट्रीय चुनौतियाँ अधिक मुखर हो गईं। अमेरिका द्वारा आर्थिक प्रतिबन्ध, कंधार विमान अपहरण, गुजरात दंगे आदि चुभने लगे थे। । पडोसी देशों के साथ मधुर सम्बन्ध बनाने का उनका प्रयास अविस्मरणीय है। वाजपेयी मानते थे कि 'पडोसी बदले नहीं जा सकते'-उनका भाव क्षेत्रीय संबंधों को मजबूत करने से था।

अटल बिहारी वाजपेयी यह मानते थे कि 'मैं इतना बड़ा ना हो जाऊं कि किसी को अपने गले न लगा सकूं'। उनकी मन की यह इच्छा थी कि 'जिन्दगी में अपयश न मिले' विपक्ष में रहते हुए यदि उन्होंने सरकार की कटु आलोचना की तो वहीं पर विरोधी पार्टी के नेताओं के प्रति आदर और सम्मान की भावना भी प्रकट की। पंडित नेहरु के निधन पर शोक व्यक्त करते हुए संसद में 29 मई 1964 को मुक्त कंठ से उनकी प्रसंशा की, 1971 का युद्ध जीतने पर इंदिरा गाँधी की प्रशंसा की। मैंने उनका एक साक्षात्कार देखा। प्रश्न पूछा गया कि भाजपा में दो दल हैं एक गरम और दूसरा नरम, आप किस दल में हो। उन्होंने उत्तर दिया कि मैं किसी भी दलदल में नहीं हूँ। मुझे अपने विद्यार्थी काल में दो बार उनको समीप से देखने का अवसर प्राप्त हुआ है, सर्वप्रथम बिलासपुर और इसके बाद शिमला की एक रैली में। इस लेख के द्वारा मैं उनको भावपूर्ण श्रद्धांजलि अर्पित करता हूँ। राष्ट्रभाषा हिन्दी के अनन्य उपासक, कवि राजनेता, राष्ट्रपुरुष, पूर्व प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी जी को हार्दिक विनम्र श्रद्धांजलि। ❖ **लेखक वर्तमान में सदस्य राष्ट्रीय खादी एवं ग्रामोद्योग बोर्ड भारत सरकार हैं।**

अटल चिर परिचित चिर जाने, अटल को अनजान न कर दें

-डॉ. उमेश कुमार पाठक

राष्ट्रवाद, राष्ट्रप्रेम और हिंदुस्तान की राजनीति में विलक्षण व्यक्तित्व के धनी अटल बिहारी वाजपेयी का अवसान लेकर आया 16 अगस्त 2018 का दिन। पूरा भारत शोक में डूब गया। आज ''.....मैं जी भर जीया, मैं मन से मरूं लौटकर आऊंगा, कूच से क्यों डरूं?'', ''काल के कपाल पर लिखने-मिटाने वाले'' तथा देश को मंदिर, खुद को पुजारी तथा राष्ट्रदेव की पूजा में खुद को समर्पित करने वाले पूर्व प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी अपनी इहलीला समाप्त कर परलोकवासी हो गए। सही मायने में आदर्श राजनीति के पितामह, भारतरत्न व तीन बार देश का नेतृत्व संभाल चुके पूर्व प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी जैसे युगपुरुष का देहावसान एक स्वर्णिम युग का अंत है। इस शोकाकुल घड़ी में भारत के राष्ट्रपति रामनाथ कोविंद ने जहां पूर्व प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी को भारतीय राजनीति में नवचेतना का संचार करार देते हुए अपना शोक अभिव्यकत किया है तो वहीं दूसरी ओर हमारे प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने पूर्व प्रधानमंत्री अटलजी के राष्ट्र निर्माण में योगदान को असाधारण करार देते हुए कहा है कि 'इसे शब्दों में बयां नहीं किया जा सकता है'। उनकी दृष्टि में अटल जी हरेक भारतीय के दिल और दिमाग पर राज करते हैं।

उल्लेखनीय है कि कवि, पत्रकार, प्रखर वक्ता और अभूतपूर्व राजनेता श्री अटल बिहारी वाजपेयी का जन्म 25 दिसंबर 1924 को मध्य प्रांत के ग्वालियर में हुआ था। उनके पिता का नाम पं. कृष्णबिहारी वाजपेयी था जो कि एक शिक्षक थे। उनकी स्नातक तक की शिक्षा ग्वालियर में ही पूरी हुई तथा उसी दौरान वे तत्कालीन विक्टोरिया कॉलेज यानी वर्तमान महारानी लक्ष्मीबाई महाविद्यालय में छात्रसंघ के सचिव चुने गए। कालांतर में उन्होंने कानपुर के डी.ए.वी. कॉलेज में विधि स्नातक पाठ्यक्रम में प्रवेश लिया। फिर वे लखनऊ आ गए तथा वहीं पर पत्रकारिता तथा राष्ट्रीय राजनीति में ऐसे लीन हुए, ऐसे सक्रिय हुए कि समकालीन भारतीय राजनीति के पितामह के रूप में वर्ष 2004 ई. तक सुविख्यात रहे। वे दस बार लोकसभा में चुने गए- दो बार बलरामपुर से, दो बार नई दिल्ली से, एक बार ग्वालियर से तथा अंत में पांच बार लखनऊ से निर्वाचित हुए। ध्यातव्य है कि वह दो बार राज्यससभा के लिए भी चुने गए। वैसे तो उन्होंने अपना पहला लोकसभा चुनाव वर्ष 1955 में ही लड़ा था, लेकिन वे पराजित हुए थे। लेकिन वर्ष 1957 ई. में उत्तर प्रदेश के बलरामपुर से जनसंघ के प्रत्याशी के रूप में उन्हें जीत हासिल हुई। वर्ष 1957 से 1977 ई. तक यानी कि बीस वर्ष तक लगातार वे जनसंघ के संसदीय दल के नेता रहे। उल्लेखनीय है कि आपातकाल के उपरांत मोरारजी देसाई की सरकार में दो वर्षों तक 1977-79 तक उन्होंने विदेश मंत्रालय का दायित्व संभाला। हालांकि, वर्ष 1980 में उन्होंषने असंतुष्ट होकर जनता पार्टी छोड़ दी और भारतीय जनता पार्टी की स्थापना की। वर्ष 1984 ई. में लोकसभा में दो सदस्यों से बढ़कर भाजपा को 1996 में पहली बार केंद्र की सत्ता तक लाने और फिर 1998 में बहुमत की सरकार चलाने का श्रेय अटलजी को प्राप्त है। अब मैं भारत रत्न अटल बिहारी वाजपेयी के व्यक्तित्व एवं कृर्तत्व संबंधी विशिष्टताओं पर प्रकाश डालना चाहूंगा। दरअसल अटलजी के व्यक्तित्व एवं कृर्तत्व में कोई फर्क नहीं है। उनके विचारों को समझने के लिए उनकी रचनाओं को पढ़ना आवश्यक है। उनके आचरण एवं कृर्तत्व को समझने के लिए उनके व्यक्तित्व को भी जानना अनिवार्य है।

एक कवि व पत्रकार की हैसियत से अपनी निरंतर रचनात्मकता एवं जीवन साधना के अनवरत विस्तार में उनकी कविता व पत्रकारिता न तो किसी आंदोलन की वंश वर्तनी हुई और न ही किसी वाद की अनुयायिनी। संप्रेषणीयता व संवेदनशीलता उनकी कविता एवं पत्रकारिता दोनों का अन्यतम गुण है जबकि राष्ट्रीयता एवं सामाजिकता उसका अद्वितीय धर्म। **उनकी राजनीतिक-सामाजिक चेतना सदैव उच्च मानवीय आदर्शों और उच्चतर सामाजिक चेतना के यथार्थ बोध का लक्ष्य लेकर चलती रही है, जिसका राष्ट्र-निर्माण की प्रक्रिया में समर्पित दृष्टिकोण अपनी बुनियादी शर्तों के कारण और भी महत्वपूर्ण हो उठता है। अटलजी के व्यक्तित्व से प्रभावित होकर डॉ. मुखर्जी ने कहा था कि ''यदि मुझे वाजपेयी जैसे तीन लोग मिल जाएं तो मैं हिंदोस्तान का भाग्य बदल दूं।''** अस्तु, अटलजी जिस राजनीतिक-सामाजिक चेतना के प्रतिनिधि हैं उसके आधार अपनी समग्रता व मूल में कहीं-न-कहीं राष्ट्रीय जागरण से संबंधित राष्ट्रीय, सामाजिक, सांस्कृंतिक व राजनीतिक मूल्य हैं। निश्चयत: भारतीय राष्ट्रीय जागरण के विशिष्ट प्रभावों में वे उस मलय समीर को भीतर लाते हैं जो हमारी मानवीय चेतना की मूल्यववान दृष्टि है तथा जो संकुचित मानसिकता व आचरण का परित्याग करके प्रवृत्ति के साथ हर अन्याय के विरूद्ध खड़े होने की विवेकानंदी चेतना को रेखांकित करती है। ❖

अटल जी के प्रति श्रद्धान्त हिमाचल

हिमाचल को दूसरा घर मानने वाले पूर्व प्रधानमंत्री भारत रत्न अटल बिहारी वाजपेयी हमेशा हिमाचल वासियों के दिलों में रहेंगे। अटल जी की स्मृतियां साझा करने के लिए आयोजित सर्वदलीय प्रार्थना सभा में रिज मैदान शिमला पर राजनीति दूर किनारे पर भी नहीं थी। प्रदेश के दिग्गज राजनेताओं ने उन्हें याद किया। दिल्ली से लाए अस्थि कलश प्रार्थना सभा स्थल में रखे गए। जहां सभी ने राष्ट्र के सर्वमान्य नेता अटल जी को श्रद्धांजलि दी। सभी ने उनके साथ बिताए समय को याद किया। प्रार्थना सभा में सभी ने अटल जी के हिमाचल प्रेम को प्रणाम किया। राज्य के विकास में उनके योगदान को सभी ने सराहा। प्रार्थना सभा में सरकार के सभी मंत्री, भाजपा सांसदों सहित कांग्रेस नेताओं में पूर्व मुख्यमंत्री वीरभद्र सिंह, मुकेश अग्निहोत्री, माकपा के राकेश सिंघा, विक्रमादित्य सिंह, अनिरूद्ध सिंह सहित कई अन्य गणमान्य जन मौजूद थे। विभिन्न राजनेताओं के वक्तव्य इस प्रकार रहे-

जय राम ठाकुर, मुख्यमंत्री हिमाचल सरकार:- मुझे अपने राजनीतिक जीवन में अटल जी का सहयोग और आशीष मिला। वह ऐसे युग पुरूष थे कि जिनके कई आयाम रहे। समूचा राष्ट्र और हिमाचल सदा उनका ऋणी रहेगा।

जगत प्रकाश नड्डा, केंद्रीय स्वास्थ्य मंत्री:- वह सर्वमान्य नेता थे और उनकी वाणी में ओज था। दूरदर्शी नेता थे और उनकी अथक मेहनत ने न केवल भाजपा को विस्तार दिया, बल्कि आने वाली पीढ़ियों को भी अपने प्रेरक व्यक्तित्व से प्रभावित किया।

शांता कुमार, भाजपा सांसद:- वह मेरे जीवन की अमूल्य निधि थे। नरसिंहा राव की सरकार के दौरान भी अटल जी के व्यक्तित्व के प्रभाव से हिमाचल को रायल्टी का फंसा हुआ पैसा मिला था।

वीरभद्र सिंह पूर्व मुख्यमंत्री :- वह राजनीति के दायरे से परे थे। मैंने हमेशा उन्हें पार्टी लाइन से ऊपर उठकर देशहित की बात करते ही देखा। उनके समय में हिमाचल का विकास भरपूर हुआ। कोई भी प्रस्ताव बनाकर भेजा गया तुरंत अटल सरकार ने राज्य को पैसा दिया।

प्रेम कुमार धूमल, पूर्व मुख्यमंत्री:- प्रदेश के विकास के लिए प्रस्ताव भेजना तो दूर केवल बताने भर पर भी काम हो जाता था। अटल जी के लिए हिमाचल हमेशा विकास के मामले में प्राथमिकता में रहा। ❖

क्षणिका

''क्या हार क्या जीत में, किंचित नहीं भयभीत मैं,
संघर्ष पथ पर जो मिले, यह भी सही वह भी सही,
वरदान नहीं मांगूगा, हो कुछ पर हार नहीं मानूंगा।''
''बेनकाब चेहरे हैं, दाग बड़े गहरे हैं,
टूटता तिलिस्म आज सच से भय खाता हूं,
गीत नया गाता हूं।
लगी कुछ ऐसी नजर बिखरा शीशे-सा शहर,
अपनों के मेले में मीत नहीं पाता हूं,
गीत नया गाता हूं।
पीठ में छूरी सा चांद,
राहू गया रेखा फांद,
मुक्ति के क्षणों में बार-बार बंधा जाता हूं,
गीत नया गाता हूं।''

LNJ Bhilwara Group

Nurturing Sustainability and Safeguarding Environment

PROUD TO BE INDIAN
PRIVILEGED TO BE GLOBAL

Statkraft

Year 1999

Encompassing its Renewable Power Vision in the early 90s, **LNJ Bhilwara Group started construction of 86 MW Malana Power Hydroelectric project (HEP) in January, 1999.** The Plant was commissioned in the year 2001 in a record period of 30 months. Malana Power Company Limited is India's first merchant hydro power plant. The Malana Power 86 MW HEP is located at Dist. Kullu in Himachal Pradesh and has been generating power since the year 2001. This is the landmark project of the Group that created a revolution in the future of private participation in hydroelectric power generation in India.

Way Forward in the Year 2004

In the year 2004, **LNJ Bhilwara Group collaborated with Statkraft, Norway** (then SN Power) and entered into a joint venture with them by divesting 49% equity stake in Malana Power Company Ltd. for the implementation of **Allain Duhangan 192 MW Hydroelectric Project (ADHEP)**. Both the joint venture partners work in close cooperation and exchange technical and financial expertise. As a result of joint efforts, the company introduced improved construction and maintenance systems. The joint venture fittingly integrates the domestic operating status and knowledge of Malana Power Company Ltd. and technical & international experience of Statkraft.

Year 2010

The strong synergy effect between LNJ Bhilwara group & Statkraft, Norway led to the successful commissioning of the group's 192MW Allain Duhangan hydroelectric project in the year 2010. International Finance Corporation, Washington is also a minority shareholder in ADHEP.

Accolades & Achievements:

- *Malana 86MW HEP is first company in India to successfully get registered for International Renewable Energy Certificates (IREC).*
- *ADHEP was conferred "Gold !ward for hydro power producer of the year at Asian Power Awards" and was also conferred "Bronze Award in the category Independent Producer of the year" at the function held on 4th October 2012 at Bangkok, Thailand.*
- *The 192 MW Allain Duhangan HEP was conferred with Runners-up award for Best Hydro Power project by Power Line Awards 2013.*

Corporate Office: Bhilwara Towers, A -12, Sector-1, Noida – 201301, U.P. | www.lnjbhilwara.com | www.malanapower.com

विश्व संवाद केन्द्र ने किया पौधारोपण

विश्व संवाद केन्द्र शिमला द्वारा स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर वृक्षारोपण कार्यक्रम का आयोजन किया गया। विश्व संवाद केन्द्र न्यास व समिति के सदस्यों ने मिलकर शिमला के चार्ली-विल्ला में देवदार, बाण, अनार व अन्य फूलदार पौधे रोपे। इस अवसर पर राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के प्रांत प्रचार प्रमुख महीधर प्रसाद, आकाशवाणी शिमला के क्षेत्रीय समाचार प्रमुख संजीव सुन्दरियाल व विश्व संवाद केन्द्र प्रांत प्रमुख दलेल सिंह ठाकुर विशेष रूप से उपस्थित रहे। विश्व संवाद केन्द्र न्यास के अध्यक्ष प्रो. नरेन्द्र शारदा ने बताया कि संवाद केन्द्र पिछले दो वर्षों से लगातार वृक्षारोपण कार्यक्रम करता आ रहा है। उन्होंने कहा कि संवाद केन्द्र द्वारा जो पौधो लगाये गए हैं, उसके संरक्षण के लिए विश्व संवाद केन्द्र के सचिव राजेश बंसल जी को जिम्मा सौंपा गया है जो लगातार इन पौधों की देखरेख करेंगे। नरेन्द्र शारदा ने कहा कि यही नहीं समिति के अन्य पदाधिकारी यादविन्द्र सिंह चौहान, प्रदीप शर्मा, गुलशन रॉय, समय-समय पर संवाद केन्द्र द्वारा लगाये गये पौधों की देख-रेख करेंगे। इस मौके पर समिति के अन्य सदस्य प्रकाश भारद्वाज, जय सिंह व स्थानीय लोगों व बच्चों ने भी बढ़-चढ़कर हिस्सा लिया और पौधो रोपे। ❖

केरल में बाढ़ विभीषिका पर सरकार्यवाह सुरेश (भय्या जी जोशी) का आह्वान

केरल राज्य एक अभूतपूर्व, अप्रत्याशित बाढ़ की विभीषिका का सामना कर रहा है जिसमें सैकड़ों लोगों की जानें जा चुकी हैं। हजारों लोगों को बेघर होना पड़ा है और लाखों लोग इनके स्थानों पर फंसे हुए हैं। केरल राज्य आज एक भयानक संकट के कगार पर है।

इनके बाधाओं के बावजूद हमारी सेना, राष्ट्रीय आपदा राहत बल, केंद्र व राज्य सरकार बाढ़ राहत के लिए युद्ध स्तर पर कार्य कर रहे हैं। इनके साथ-साथ बड़ी संख्या में आमजन, संघ के स्वयंसेवक, सेवाभारती और इनके सामाजिक, धार्मिक एवं स्वयंसेवी संगठन अपनी जान को जोखिम में डालते हुए पीड़ितों के लिए बचाव और राहत के कार्य में दृढ़तापूर्वक सहयोग कर रहे हैं। उनकी तत्परता और सेवाा प्रशंसनीय है।

लेकिन संकट विकट है, साधन सीमित हैं। इस अवसर पर राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ धार्मिक, सामाजिक संगठनों सहित समस्त राष्ट्र जनों से आह्वान करता है कि संकट की इस घड़ी में हम केरलवासियों के साथ खड़े हों और बाढ़-पीड़ितों की बढ़-चढ़ कर हर संभव सहायता करें। ❖

राजकीय महाविद्यालय ऊना में मनाया गया अखण्ड भारत संकल्प दिवस

केन्द्रीय विवि धर्मशाला के कुलपति डॉ. कुलदीप चन्द्र अग्निहोत्री ने कहा कि अखंड भारत का मानचित्र देखकर गर्व का अनुभव होता है। प्राचीन भारत की संस्कृति व इतिहास की गौरवगाथा है कि हम विशाल राष्ट्र में रह रहे हैं। उसी परम वैभव को हमें फिर से प्राप्त करना है। डॉ. अग्निहोत्री राजकीय महाविद्यालय ऊना में महाराणा प्रताप अध्ययन मंडल की ओर से आयोजित अखंड भारत संकल्प दिवस के अवसर पर संबोधित कर रहे थे। उन्होंने कहा हमारा देश मनुष्यों द्वारा नहीं बल्कि प्रकृति की कृपा से बना है। अगर हम इससे छेड़छाड़ करेंगे तो प्रकृति अपना रूप एक न एक दिन जरूर दिखाएगी। समय के साथ भारत का स्वरूप बदला है। बाहरी आक्रमणों और विभाजन से प्राचीन भारत से कई देशों का जन्म हुआ। अगर आज का भारत पहले की तरह होता तो किसी भी अन्य देश में जाने के लिए हमें वीजा या अन्य दस्तावेजों की आवश्यकता नहीं होती।

अमृतसर व लाहौर का उदाहरण देते हुए कहा अगर पाकिस्तान नहीं बनता तो जिस प्रकार हम यहां से पंजाब या अन्य राज्यों में बस या ट्रेन की सहायता से आते हैं, उसी प्रकार हम यहां से पाकिस्तान और वहां से आगे अफगानिस्तान , उससे आगे किसी भी देश में जा सकते थे। अब किसी देश को एकजुट रखने की आवश्यकता है। विद्यार्थी कल का नहीं आज का नागरिक है। विद्यार्थी सकारात्मक सोच से आगे बढें। यही इस कार्यक्रम का उद्देश्य है। अखंड भारत संकल्प दिवस कार्यक्रम की कल्पना सराहनीय प्रयास है।

युवाओं को इसका महत्व समझना होगा। कार्यक्रम में छात्र-छात्राओं ने देशभक्ति पर आधारित कार्यक्रम प्रस्तुत किए। इस अवसर पर महाविद्यालय के प्राचार्य डॉ. टीसी शर्मा, डॉ. हेमराज, सुभाष चंद, दीपक कुमार, महिक, अभिलाष, शिवम्, नवीन, सूरज कुमार, मुनीष कुमार, अनिल, धीरज, शिवकुमार, विवेक और उमंग सहित महाविद्यालय के अन्य प्राध्यापक गण, महाविद्यालय के छात्र-छात्राएं व स्थानीय गणमान्य जन भी उपस्थित रहे।

प्रदेश में अन्य स्थानों पर भी अखंड भारत संकल्प दिवस का आयोजन किया गया। शिमला के कोटशेरा, फागली संस्कृत महाविद्यालय, रामपुर महाविद्यालय, सीमा कॉलेज रोहडू में भी अखंड भारत संकल्प दिवस के कार्यक्रम किए गए। इन कार्यक्रमों में महाविद्यालय के छात्र-छात्राओं के अतिरिक्त प्राध्यापक एवं स्थानीय गणमान्य भी सम्मिलित हुए। ❖

किसान क्रैडिट कार्ड से जुड़ेगा फसल बीमा

केंद्र सरकार ने किसानों को फसलों की बर्बादी से होने वाले नुक्सान से बचाने तथा उन्हें बैंकिंग व्यवस्था से जोड़ने को लेकर किसान क्रैडिट कार्ड (के.सी.सी) को प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना के लिए एक उपकरण के रूप में इस्तेमाल करने की योजना बनाई है। दरअसल जिन किसानों के पास ये कार्ड हैं उनकी फसल का बीमा तो स्वचालित माध्यम से हो जाता है जबकि बिना कार्ड वाले किसान फसल बीमा लेने में कम रूचि दिखाते हैं। कृषि मंत्रालय की निगरानी में चल रही फसल बीमा योजना में यह भी सामने आया है कि कंपनियां बगैर कार्ड वाले किसानों से संपर्क साधने में लापरवाही बरतती है। इसका कारण यह है कि ऐसे किसानों को बीमा मुहैया कराने में कंपनियों को अतिरिक्त खर्च करना पड़ता है। के.सी.सी. में किसानों को निर्धारित राशि तक उधार मिलता है और बैंक उस पर न्यूनतम ब्याज लेते हैं।

75 प्रतिशत किसानों को जोड़ने का लक्ष्य

कृषि मंत्रालय के एक अधिकारी के मुताबिक पिछले वित्त वर्ष अंत तक उत्तर प्रदेश में सर्वाधिक 42.25 लाख किसानों ने के.सी.सी. अपनाया है और ये क्रियाशील हैं, जबकि दूसरे नंबर पर महाराष्ट्र (22 लाख से ज्यादा) और तीसरे नंबर पर आंध्र प्रदेश (18 लाख से अधिक) है। मंत्रालय का लक्ष्य सभी कार्ड को चालू हालत में लाना और अगले पांच साल में कम से कम 75 प्रतिशत किसानों को इससे जोड़ना है। ❖

ए.पी.एम.सी. अधिनियम को अपनाने से किसानों की आय होगी दोगुनी

नीति आयोग के सदस्य रमेश चंद ने कहा कि फसलों के न्यूनतम समर्थन मूल्य (एम.एस.पी.) में वृद्धि और राज्यों में आदर्श ए.पी.एम.सी. अधिनियम अपनाए जाने से वर्ष 2022 तक किसानों की आय को दोगुना करने में मदद मिलेगी। प्रतियोगी बाजारों को बढ़ावा देने सहित ये कदम सरकार के पांच साल में किसानों की आमदनी को दोगुना करने के लक्ष्य के अनुरूप है। उन्होंने एक साक्षात्कार के दौरान कहा, ''मुझे पूरा भरोसा है कि यदि केंद्र सरकार द्वारा सुझाए गए उपायों को राज्य सरकारें अपनाती है तो हम राष्ट्रीय स्तर पर इस लक्ष्य को हासिल करने की स्थिति में होंगे। उन्होंने कहा कि कृषि क्षेत्र के विकास दर 5 प्रतिशत के करीब है। केंद्र ने लक्ष्य हासिल करने के 'रोडमैप' के घटकों में 'किसानों द्वारा बेहतर मूल्य प्राप्ति' को भी शामिल किया है। उन्होंने कहा कि किसानों की आय दोगुनी करने के लक्ष्य को विभिन्न लागतों में कटौती, फसल के लिए उचित मूल्य दिलाकर, फसल कटाई के बाद होने वाले नुकसान को रोकर और आय के वैकल्पिक स्त्रोतों को तैयार कर हासिल किया जा सकता है। ❖

आर्थिक आधार पर सभी वर्गों को 15 प्रतिशत आरक्षण दे सकती है सरकार

मराठा व पटेल समेत कई जातियों की ओर से उठी आरक्षण की मांग का निपटारा केंद्र सरकार आर्थिक आधार पर आरक्षण देकर कर सकती है। सरकार में उच्चस्तर पर आर्थिक रूप से पिछड़ों के लिए 15 प्रतिशत आरक्षण देने पर मंथन हो रहा है। इसके लिए दायरा बढ़ाने (50 प्रतिशत से ज्यादा) के बारे में कानूनी राय भी ली गई है। सहमति बनी तो सरकार संसद के शीत सत्र में संविधान संशोधन विधेयक प्रस्तुत कर सकती है। सत्ता में आने के बाद मोदी सरकार को विभिन्न जातियों के आरक्षण आंदोलन का सामना करना पड़ा है। गुजरात में पटेल आंदोलन तो हरियाणा में जाट आंदोलन ने सरकार को परेशानी में डाला। अब महाराष्ट्र में मराठा आंदोलन को खत्म करने का कोई रास्ता सरकार को नहीं सूझ रहा। एक वरिष्ठ मंत्री के मुताबिक, पटेल आंदोलन के समय से ही सभी जातियों में आर्थिक पिछड़ों की अलग से आरक्षण की रणनीति पर विचार शुरू हो गया था। कई दौर की बातचीत के साथ कानूनी स्तर पर भी विमर्श हो चुका है। मराठा आरक्षण आंदोलन के हिंसक होने के बाद आर्थिक आधार पर आरक्षण की व्यवस्था से स्थायी समाधान ढूंढने की कवायद शुरू हुई है। इस क्रम में आयकर के दायरे में बाहर वाले परिवारों के लिए आरक्षण पर भी बात हुई है। सुप्रीम कोर्ट ने आरक्षण की सीमा अधिकतम 50 प्रतिशत सीमित कर दी है। ❖

मुस्लिम पर्सलन लॉ बोर्ड भंग हो

''मुस्लिम पर्सलन लॉ बोर्ड के द्वारा देश के हर जिले में शरिया अदालतें स्थापित करने का निर्णय न सिर्फ मुस्लिम महिलाओं बल्कि सम्पूर्ण देश के लिए घातक सिद्ध होगा साथ ही मुस्लिम समाज में न्यायपालिका के प्रति एक गहरे असम्मान का निर्माण भी करेगा।'' विहिप के संयुक्त महामंत्री डॉ. सुरेन्द्र जैन ने शरिया अदालतों को देश में समानांतर न्याय व्यवस्था खड़ी करने का एक षड्यंत्र करार देते हुए कहा कि यह कैसी विडम्बना है कि स्वयं का कोई वैधानिक अस्तित्व न होते हुए भी आल इण्डिया मुस्लिम पर्सलन लॉ बोर्ड गैर कानूनी शरिया अदालतों का निर्माण कर रहा है। अब समय आ गया है कि मुस्लिम समाज को पिछड़ा बनाए रखने वाले इस कट्टरपंथी असंवैधानिक संगठन को ही भंग कर दिया जाए। डॉ. जैन ने चेताया कि शरिया अदालतों के माध्यम से देश के मुल्ला-मौलवी तीन तलाक को अवैध घोषित करने के सर्वोच्च न्यायालय के निर्णय को विफल कर देंगे। हलाला, बहु विवाह का मामला भी सुप्रीम कोर्ट के सामने है जिसका कोई भी सभ्य-समाज समर्थन नहीं कर सकता। पर्सनल लॉ बोर्ड का यह नया पैंतरा सर्वोच्च न्यायालय के संभावित निर्णय को विफल करने का भी एक षड्यंत्र है। विश्व हिंदू परिषद का यह मानना है कि शरिया अदालतें मुस्लिम महिलाओं पर अत्याचार करने के जिहादियों के अधिकार को संरक्षित कर देश में विद्वेष का वातावरण निर्माण करने का एक सशक्त माध्यम बनेंगी। विहिप का यह भी मत है कि शरिया अदालतें मुस्लिमों पर कहर बनकर टूटेंगी और समाज को इनके तालिबानी निर्णय को मानने के लिए मजबूर होना पड़ेगा। इनकी स्थापना के बाद बंगाल की अनीता की तरह नाबालिग हिंदू लड़की का जबरन धर्मांतरण कर उसके निकाह को वैधानिक रूप देने का कुप्रयास भी किया जाएगा। जिहादियों द्वारा हिंदू महिलाओं पर किए जाने वाले अत्याचारों को ये शरीयत सम्मत घोषित करेंगी। इतना ही नहीं, यदि हिंदू भी इनका विरोध करेगा तो उन पर अत्याचार किए जाएंगे। नाइजीरिया व सूडान आदि देशों में शरिया अदालतों का निर्णय थोपने के कारण ही तो हिंसक परिस्थितियां निर्माण हुई। उन्होंने पूछा कि क्या पर्सलन लॉ बोर्ड भारत में भी यही स्थिति लाना चाहता है? ❖

विवि और कॉलेज परिसरों में जंक फूड पर रोक

विश्वविद्यालयों और उच्च शिक्षण संस्थानों को अपने कैंपस में जंक फूड की बिक्री पर हर हाल में रोक लगानी होगी। विश्वविद्यालय अनुदान आयोग (यूजीसी) ने विभिन्न विवि और कॉलेजों को इस संदर्भ में निर्देश जारी किया है। विवि और कॉलेजों के परिसर में जंक फूड की बिक्री पर प्रतिबंध नवंबर 2016 में मानव संसाधन विकास मंत्रालय के एक निर्देश के बाद लगाया गया था। अब यूजीसी ने संस्थानों को इसे सख्ती से लागू करने के लिए पुन: निर्देश जारी किया है। छात्रों के स्वास्थ्य को बेहतर बनाए रखने की चुनौती को देखते हुए यूजीसी के सचिव प्रोफेसर रजनीश जैन ने इस संबंध में निर्देश जारी किए हैं। शिक्षण संस्थानों को अपने परिसर में छात्रों के लिए अच्छे और सेहत के अनुकूल भोजन की व्यवस्था करने को भी कहा गया है। आयोग का कहना है कि इस कदम से छात्रों की जीवन शैली में सुधार होगा। मोटापा और जंक फूड से होने वाली बीमारियों से भी उन्हें निजात मिलेगी। इस संबंध में छात्रों के बीच जागरूकता अभियान चलाने पर भी जोर दिया गया है। ❖

With Best Compliments from:

KKC

KAY KAY TRADING CO.

Fruit & Vegetable Commission Agent

Shop No. 16A, A.P.M.C.
Building, Dhalli, Shimla-12

94180-41712, 98164-44448, 92188-44448 (o)

Email: kkc16agmail.com

कहानी हिमाचल के गठन की

-गोपाल दत्त शर्मा

हिमाचल प्रदेश की कहानी का आगाज हुआ था जनवरी 1947 में। राजा दुर्गाचंद (बघाट) की अध्यक्षता में शिमला हिल्स स्टेट्स यूनियन की स्थापना की गई। इसका सम्मेलन जनवरी 1948 में सोलन में हुआ। इसी सम्मेलन में हिमाचल प्रदेश के निर्माण की घोषणा की गई। दूसरी तरफ प्रजा-मंडल के नेताओं का शिमला में सम्मेलन हुआ, जिसमें डॉ. यशवंत सिंह परमार ने इस बात पर जोर दिया कि हिमाचल प्रदेश का निर्माण तभी संभव है, जब प्रदेश की जनता तथा राज्य के हाथों में शक्ति सौंप दी जाए। शिवानंद रमौल की अध्यक्षता में हिमालयन प्लांट गर्वनमेंट की स्थापना की गई, जिसका मुख्यालय शिमला में था। दो मार्च, 1948 ई. को शिमला हिल्स स्टेट्स के राजाओं का सम्मेलन दिल्ली में हुआ। राजाओं की अगुवाई मंडी के राजा जोगिंदर सेन कर रहे थे। इन राजाओं ने हिमाचल प्रदेश में शामिल होने के लिए 8 मार्च 1948 को एक समझौते पर हस्ताक्षर किए। इस तरह 15 अप्रैल 1948 को हिमाचल प्रदेश राज्य का निर्माण किया गया।

मंडी, महासू, चंबा और सिरमौर चार जिलों में बांटकर प्रशासनिक कार्यभार एक मुख्य आयुक्त को सौंपा गया। बाद में इसे 'ग' वर्ग का राज्य बनाया गया। भाखड़ा-बांध परियोजना का कार्य चलने के कारण राजा आनन्द चंद के अधीन बिलासपुर रियासत को अलग प्रदेश के रूप में रखा गया था। एक जुलाई, 1954 को कहलूर रियासत को हिमाचल प्रदेश में शामिल करके प्रदेश का पांचवां जिला बिलासपुर नाम से बनाया गया। एक मई, 1960 को छठे जिले के रूप में किन्नौर का निर्माण किया गया। इसमें महासू जिले की चीनी तहसील तथा रामपुर तहसील के 14 गांव शामिल किए गए।

कांगड़ा, कुल्लू, लाहौल, स्पीति, शिमला आदि अभी भी पंजाब में थे। 1965 में हिमाचल तथा पंजाब के पर्वतीय क्षेत्रों का एकीकरण करते हुए पंजाब राज्य पुनर्गठन का प्रस्ताव लाया गया लेकिन पंजाब के तत्कालीन मुख्यमंत्री प्रतापसिंह कैरों किसी भी दशा में पंजाब के पर्वतीय क्षेत्र को हिमाचल में शामिल किए जाने के विरूद्ध थे। कैरों हिमाचल को पंजाब में मिलाकर महापंजाब या विशाल पंजाब (ग्रेटर पंजाब) बनाना चाहते थे। उनकी इस अव्यावहारिक सोच तथा घोर विरोध के कारण डॉ. परमार और कैरों के बीच काफी कड़वाहट आ गई थी। आखिरकार पंजाब राज्य पुनर्गठन आयोग की सिफारिशों के आधार पर 1 नवंबर, 1966 को पंजाब राज्य का पुनर्गठन हुआ। इसके बाद पंजाब के कांगड़ा, कुल्लू, शिमला और लाहौल-स्पीति जिलों के साथ ही अंबाला जिले का नालागढ़ उप-मंडल, जिला होशियारपुर की ऊना तहसील का कुछ भाग और जिला गुरूदासपुर के डलहौजी व बकलोह क्षेत्र को हिमाचल में शामिल कर दिया गया।

इसके बाद शुरू हुआ भिन्न-भिन्न राजनीतिक दलों से बनी 'पहाड़ी एकीकरण समिति के ध्वज तले हिमाचल को पूर्ण राज्य का दर्जा दिलाने का अभियान जिसका नेतृत्व डॉ. परमार ने किया। फिर जुलाई 1970 में प्रधानमंत्री श्रीमती इंदिरा गांधी ने हिमाचल को पूर्ण राज्य का दर्जा देने की घोषणा की और दिसंबर 1970 को संसद ने इस आशय का बिल पारित कर दिया। इस तरह से हिमाचल प्रदेश को पूर्ण राज्य का दर्जा 25 जनवरी 1971को मिला। हिमाचल को भारत का अठारहवां राज्य घोषित किया गया। 1 नवम्बर 1972 को कांगड़ा जिले को विभाजित कर तीन नए जिले कांगड़ा, ऊना और हमीरपुर बना दिए गए। महासू जिले को विभाजित कर सोलन और शिमला बनाए गए। इस तरह से आधुनिक हिमाचल अपने रूप में आया। हिमाचल प्रदेश बहुत पहले ही अलग राज्य बन गया और इस वजह से आज तरक्की की राह पर तेजी से आगे बढ़ रहा है। उत्तराखंड को यह सुख मिलने में बहुत देर लग गई। डॉक्टर परमार की कोशिश आज के उत्तराखंड के हिस्सों को भी मिलाकार पहाड़ी राज्य बनाने की थी। उनका यह सपना तो पूरा नहीं हो पाया मगर आज भी उत्तराखंड को अलग राज्य बनाने के लिए आंदोलन करने वाले डॉक्टर परमार का नाम बड़ी इज्जत से लेते हैं। डॉक्टर परमार को उत्तराखंड में विशेष सम्मान प्राप्त है। ❖

गौरवमय संस्कृति को सहेजे मण्डयाली बोली

-ऊमा ठाकुर

किसी देश की उन्नति, संस्कृति, सभ्यता और उसके मानवीय विकास को परखने की कसौटी उसकी बोली ही होती है। किसी बोली का महत्व इस बात पर निर्भर करता है कि शिक्षा और साहित्य में उसका क्या महत्व है? किसी भी प्रदेश के लोक साहित्य को पूर्णतय: समझने के लिए उस प्रदेश में बोली जाने वाली भाषा का ज्ञान कर लेना भी आवश्यक है। हिमाचल के अधिकतरर क्षेत्रों में स्थानीय बोलियां प्रचलित हैं। इनमें मण्डयाली, महासवी, कुल्लवी, कांगड़ी और किन्नौरी बोलियां प्रमुख हैं। वर्तमान में हिमाचल में करीब बत्तीस-तैंतीस क्षेत्रीय बोलियां बोली जाती हैं। ये बोलियां, लोक-साहित्य-लोक गीत, लोक गाथाओं, दलांगी साहित्य और नैतिक मूल्यों का बेशकीमती खजाना अपने आप में संजोए है। मण्डी, हिमाचल प्रदेश का महत्वपूर्ण एवं ऐतिहासिक जिला है। मण्डयाली मण्डी जनपद में बोली जाने वाली भाषा है। इसके दक्षिण में सतलुज नदी इसे महासुई से अलग करती है। इसके उत्तर में बंधाल का क्षेत्र है जिसके पूर्वी भाग के कुछ हिस्से में कुलुई बोली का कोहड़-सुआड़ इलाका पड़ता है और पश्चिमी भाग के बड़े हिस्से में कांगड़ी बोली का क्षेत्र है। डॉ. ग्रियर्सन ने इसकी तीन उप-बोलियां मानी हैं-मण्डियाली, मण्डियाली पहाड़ी, सुकेती। ध्वनि के किंचित अंतर के सिवाय वे इन तीनों में कोई भेद नहीं समझते, व्याकरण भी केवल मण्डयाली का प्रस्तुत किया गया है। **मण्डयाली भाषा को स्थायी रूप देने में घुमक्कड़ जातियों का बहुत बड़ा योगदान है जो गर्त में आती जाती रही। इनमें गुज्जर जिनका निवास स्थान आधुनिक राजस्थान बताया जाता है- वे गुज्जर अपभ्रंश भाषा बोलते थे। यही कारण है कि मण्डयाली भाषा राजस्थानी से सर्वाधिक प्रभावित है और वहां का रहन-सहन यहां के रहन-सहने से बहुत मेल खाता है। 'चोलू' यहां का प्रिय पहनावा था और राजस्थान में आज भी चोलू का महत्व घटा नहीं है। यहां पर बाजूबंद, पैरों में फूल तोड़े, न्योरा, गुड्ढे इत्यादि गहनों का प्रचलन ठीक उसी प्रकार था जैसा राजस्थान में।** मण्डयाली भाषा राजस्थानी और पंजाबी से प्रभावित होने के बाद भी अपना अस्तित्व पूर्ण रूप से बनाए हुए है।

मण्डयाली भाषा की लिपि टांकरी है। टांकरी लिपि की उत्पत्ति किस निश्चित समय में हुई, इसके बारे में स्पष्ट रूप से कुछ कहना कठिन है। लेकिन माधवराय, जिसकी स्थापना यहां के प्रतापी राजा सूर्यसेन ने 1705 में की थी, के मंदिर में उपलब्ध दुर्गापाठ की हस्तलिखित पुस्तक के आधार पर इतना तो अवश्य कहा जा सकता है कि यह लिपि 1116 में भी प्रचलित थी। क्योंकि इस पुस्तक को टांकरी में लिखा हुआ है। दूसरी प्राचीन हस्तलिखित पुस्तक नानक- शाही की है जो इस समय हिमाचल लोक संस्कृति संस्थान मण्डी में सुरक्षित है। मण्डी में प्रचलित टांकरी लिपि के स्वर, वर्ण और व्यंजन वर्ण तथा उनकी मात्राओं में अन्य स्थानों पर प्रचलित टांकरी से भिन्न है। मण्डी क्षेत्र की टांकरी में सोलह स्वर वर्ण है जबकि अन्य प्रदेश में प्रचलित टांकरी में केवल दस हैं। इस लिपि में कुछ व्यंजन वर्णों का आकार में लिखा गया है जैसे- गा, जा, डा, ढा, दा, सा, मा आदि हिमाचल लोक संस्कृति संस्थान में टांकरी में लिखित लगभग 400 हस्तलिखित पांडुलिपियां सुरक्षित हैं।

छींजें, छिजोटियां मण्डयाली लोक साहित्य की एक महत्वपूर्ण कड़ी है। छींजों में जहां सामाजिक एवं पारिवारिक रीति-रिवाजों पर प्रकाश डाला गया है, वहां इन छिंजोटियों में प्रेमी-प्रेमिकाओं की प्रणय गाथाओं का वर्णन किया गया है। दो-अढ़ाई शताब्दी पूर्व से चले आ रहे ये लोकगीत आज भी उतने ही लोकप्रिय हैं। आज भी खेतों में काम करने वाले हलदर, घास काटने वाली युवतियां और गउओं को चराने वाले ग्वाले इन छिंजोटियों को खूब गाते हैं। 'गदरेटी' छिजोटी कांगड़ा के राजा संसार चंद से संबंधित है। राजा संसार चंद ने 1762 ई. में मण्डी के राजा ईश्वर सेन को जीत कर अपना राज्य स्थापित किया था।

राजा जेता साहिब सुंदरे ओ हेड़े, जो बरधे।
गदण से ओ बकरी चरावे बकरी चरावे।
ओ नी मोरिये सुंदर गदरेठिये....
चार भी ता नी मेरेया संसार चंदा राजेया
चार भी ता हाजरू राजा पूछणे जो भेजदा।
गदण भी पूछणी किती....

क्रमश: .....

दीनदयाल उपाध्याय का एकात्म मानववाद

-डॉ. मृदुला शारदा

दीनदयाल उपाध्याय आधुनिक भारत के यथार्थवादी विचारक है। उनका एकात्म मानववाद का तथ्य आधुनिक विश्व की विभिन्न समस्याओं का विश्लेषण करता है और उनका समाधान बताता है। विश्व की मुख्य विचारधाराओं का आधार व्यक्ति या समाज रहा। उदारवादी व साम्यवादी विचारकों ने व्यक्ति व समाज को केंद्र बिंदु मानकर सामाजिक, आर्थिक और राजनैतिक व्यवस्था के तथ्य का विकास किया। दोनों विचारधाराओं में मौलिक रूप से व्यक्ति व समाज के हित में टकराव की बात की गई है। यही कारण रहा है कि पश्चिम व साम्यवादी व्यवस्थाओं में एक असुरक्षा की भावना ने जन्म लिया। संसार की मुख्य शक्ति रूस का विघटन इसका परिणाम है। पश्चिम का भौतिकवाद और आर्थिक अंधी दौड़ एक सुदृढ़ समाज के लिए गम्भीर खतरा है।

अंर्तराष्ट्रीय स्तर पर बढ़ता वैमनस्य, गरीब अमीर देशों की बढ़ती खाई इन्हीं नीतियों का परिणाम है। उपाध्याय जी का एकात्म मानववाद इन विचारधाराओं के प्रतिकूल एक ऐसी व्यवस्था पर जोर देता है जो कि सहयोग पर आधारित हो। जिसमें व्यक्ति से लेकर समिष्ट तक किसी का हित दूसरे से टकराता नहीं अपितु व्यक्ति विभिन्न प्रकार के पुरूषार्थ (वह कार्य जो व्यक्ति के हित में हो और समाज, राष्ट्र और संसार के लिए हो) जो विभिन्न संगठनों में रह कर पूरे करता है वह संतुलित व्यवस्था की स्थापना में अहम भूमिका निभाता है। व्यक्ति के चार पुरूषार्थ एक दूसरे के पूरक हैं। यह चार पुरूषार्थः धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष है। धर्म और मोक्ष दो ऐसे पुरूषार्थ है जो व्यक्ति के काम और अर्थ पुरूषार्थ को सीमित भी करते हैं और व्यक्तिवादी मानसिकता को नियंत्रित भी करते हैं। पूंजीवादी व्यवस्था में अर्थ की दौड़ सामाजिक व्यवस्था में बढ़ती खाई के लिए जिम्मेदार है। दीनदयाल उपाध्याय के अनुसार अर्थ उद्देश्य न होकर माध्यम बना रहे तो यह आर्थिक समानता की और कदम है। इस आधार पर विकसित व्यवस्था में बेरोजगारी, गरीबी जैसी समस्याएं विकराल रूप धारण नहीं कर पाएंगी। उपाध्याय जी के अनुसार व्यक्ति और समाज में द्वंद की स्थिति नहीं हो सकती। जिस सामाजिक व आर्थिक समानता का साम्यवादी विचारधारा द्वारा समर्थन किया जाता है, वह उन व्यवस्थाओं में वास्तविकता नहीं बदल सकी जो देश साम्यवादी कहलाते हैं। चीन की आर्थिक सामाजिक विषमताएं इसका व्यवहारिक प्रमाण है। चीन के साम्यवादी नेताओं का आर्थिक स्तर चीन की साधारण जनता से पूर्णतया भिन्न है। उपाध्याय आर्थिक स्तर पर पूर्ण समानता को अव्यवहारिक मानते हैं। उनके अनुसार तर्क संगत आर्थिक समानता होनी चाहिए। प्रत्येक व्यक्ति की मूलभूत, आवश्कताएं (रोटी, कपड़ा, मकान, स्वास्थ्य सेवाएं और शिक्षा) पूरी होनी चाहिए। यह समाज और राज्य दोनों का दायित्व है। इसके अतिरिक्त समाज में उद्यमी वर्ग का भी होना आवश्यक है। जिसके द्वारा आर्थिक आवश्यकताएं पूरी हो और वैश्वीकरण के युग में विश्व व्यवस्था में राष्ट्र अपनी जगह बना सके। संक्षेप में उपाध्याय जी का एकात्म मानववाद अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर वर्तमान वैचारिक मतभेदों में एक ऐसी व्यवस्था की सोच है जो एक ऐसे विश्व समुदाय को व्यवहारिक रूप दे सकती है जिसमें मनुष्य अपने विकास के साथ समाज, राज्य और मानव जाति को सुरक्षा प्रदान कर सके। जिसमें भौतिक और आध्यात्मिक तत्वों का संतुलित समावेश हो। ❖

With Best Compliments from:

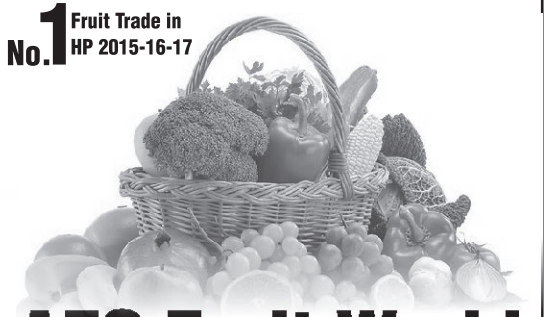

AFC Fruit World

Fruits & Commission Agents

Trade Mark Shop No.

AFC/15

Prop. Anup Pal Chauhan

Shop no. 15, New Modern Fruit & Vegetable Market, Prala, THEOG (HP)

98161-48241, 88944-98241

Email: afcshopno50@gmail.com

शरिया अदालतें: धार्मिक राज्य स्थापित करने का षड्यंत्र

हाल ही में केरल में एक घटना हुई। मदरसे में पढ़ने वाली एक लड़की हिना को इसलिए निकाल दिया गया क्योंकि उसने 'बिंदी' लगाकर एक लघु फिल्म में काम किया था। चूंकि यह निर्णय (या सजा) एक मुस्लिम संस्था ने दिया था, तो जाहिर है कि यह शरिया कानून के आधार पर दिया गया था। यह निर्णय उस प्रतिभाशाली लड़की के भविष्य का विचार किए बिना दिया गया था। लेकिन अधिक आश्चर्य की बात तो यह है कि एक वायरल पोस्ट के अनुसार उसके पिता इसलिए संतुष्ट थे कि उनकी बेटी को केवल मदरसे से निकाला गया था, उसे पत्थरों से मार-मार कर दी जाने वाली मौत की सजा नहीं दी गई थी। एक इस्लामी संस्था द्वारा दिए गए इस निर्णय के बारे में कई सवाल उठते हैं, विशेषकर अब जब मुस्लिम पर्सनल लॉ बोर्ड ने देश भर में शरिया अदालतें स्थापित करने की मांग की है। यह धर्म आधारित आदलतें भारतीय संविधान की धर्म-निरपेक्ष आत्मा के न केवल विपरीत है, बल्कि यह भारत को पिछले दरवाजे से एक धार्मिक राज्य बनाने का षड्यंत्र है।

हिना को निष्कासित करने का निर्णय, शुद्ध रूप से हिन्दुओं के प्रति नफरत के भाव से उपजा है। क्या कोई इस निर्णय का समर्थन कर सकता है, जबकि भारत का संविधान वेशभूषा की संपूर्ण स्वतंत्रता प्रदान करता है। माथे पर बिंदी लगाने में तो किसी प्रकार की अश्लीलता नहीं है। क्या किसी भी क्रिया को केवल इस आधार पर प्रतिबंधित किया जा सकता है कि कुछ लोगों के मन में किसी और धर्म की परंपरा के प्रति भरपूर नफरत के भाव हैं? हां, यह एक जानी-मानी बात है कि कई इस्लामी देश दूसरे पंथों के प्रति नफरत को जायज ठहराते हैं, उस नफरत का प्रचार-प्रसार करते हैं। यही नहीं इस्लाम धर्म के ही विभिन्न पंथ आपस में नफरत फैलाते हैं। किन्तु यह भारत है और यहां एक धर्म-निरपेक्ष संविधान है।

भारत का संविधान अपने नागरिकों को अपने धर्म का, व्यक्तिगत और संप्रदाय दोनों स्तरों पर, पालन करने की स्वतंत्रता प्रदान करता है। कई इस्लामिक देशों में ऐसा नहीं होता। कोई यह सोच भी नहीं सकता कि इन देशों में शरिया के अलावा अन्य कोई अदालतें चल सकती हैं। इन देशों में रहने वाले भारतीय नागरिकों पर इन्हीं शरिया अदालतों में केस चलाए जाते हैं। भारत में धर्म-निरपेक्ष संविधान होते हुए भी यहां मुस्लिम पर्सलन लॉ का प्रावधान किया गया है। मुस्लिम पर्सनल लॉ बोर्ड 1930 में अस्तित्व में आया। अंग्रेजों की विभाजनकारी नीति के तहत ही इसे बनाया गया था और विभाजन के बीज भी इसी के माध्यम से बोए गए थे। स्वतंत्रता के बाद, संविधान के निर्माण के समय, राष्ट्र-निर्माताओं ने धार्मिक सहिष्णुता के उदात्त भाव को बनाए रखने के उद्देश्य से मस्लिम पर्सनल लॉ बोर्ड को जारी रहने दिया। किन्तु शायद उन्होंने यह सपने में भी नहीं सोचा होगा कि आने वाले समय में भारत में मुस्लिम जनसंख्या तीन गुना बढ़ जाएगी और वोट बैंक और तुष्टिकरण की राजनीति के चलते मुस्लिम पर्सनल लॉ बोर्ड जैसी संस्था शरिया अदालत जैसी अत्यंत असंवैधानिक मांग करेगी।

इस मांग के पीछे एक और बहुत गहरी साजिश है। देश भर में मदरसों का जाल फैला हुआ है। लाखों मुस्लिम युवकों को इस्लामिक पुस्तकों और अरबी भाषा का प्रशिक्षण दिया जा रहा है। वे वर्तमान की मुख्य धारा वाली शिक्षा पद्धति से पूरी तरह अलग-थलग पड़े हुए हैं और इसलिए रोजगार योग्य भी नहीं है। पहले इन युवकों को इस्लामी देशों में मुल्ला के काम मिला करते थे। लेकिन अरबी और अफ्रीकी देशों के बीच लगातार चल रही अन्तर्निहित हिंसा के कारण, अब यह रास्ता भी बंद हो चुका है। देश भर में शरिया अदालतों की स्थापना कर बड़े पैमाने पर रोजगार का निर्माण करना, फिर चाहे वह कम आय वाला ही क्यों न हो, भी इनका एक उद्देश्य है। मस्जिद के इमामों की तर्ज पर, नई पीढ़ी को मदरसा शिक्षा की ओर आकर्षित करने का यह एक षड्यंत्र है। मुस्लिम समाज के शिक्षित और प्रबुद्ध वर्ग के लिए यह एक सुनहरा मौका है एआईएमपीएली में बैठे उन कट्टरपंथी कठमुल्लों के विरोध में खुलकर सामने आने का, जिन्हें इस्लामी देश-'बदमिजाजी दीनी बंदे' कहते हैं। ❖ **साभार: विवेक**

मातृवन्दना पत्रिका के रजत जयंती वर्ष पर समस्त पाठकों को हार्दिक शुभकामनाएं

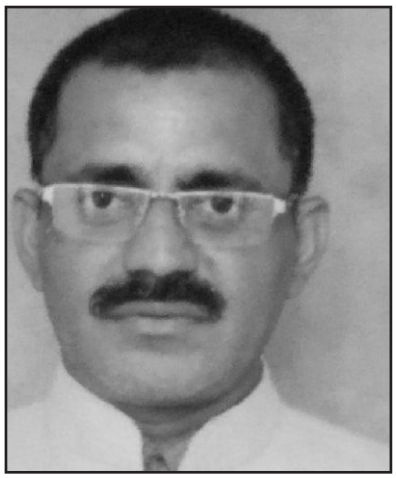

संजय कुमार सुरहेली

(बी.ए., एम.बी.ए.)

मो. 9816401827 9816401827

.बल्ह विकास मंच

प्रो.: शगुन इवैन्टस, मण्डी (हि.प्र.)

यूनिटस

शगुन टैन्ट सर्विस, शगुन लाईट एण्ड टैन्ट हाऊस,
शगुन फलोरीडेकोर्ज, शगुन कैटरिंग, शगुन बिस्तर भण्डार

मुख्य कार्यालयः

गांव व डा. बाल्ट, तहसील बल्ह, जिला मण्डी (हि.प्र.) 175008

मातृवन्दना (जागरण पत्रिका) संस्थान के रजत जयन्ती वर्ष के उपलक्ष में समस्त मातृवन्दना पाठक प्रबन्धन परिवार को पत्रिका के 25 वर्ष तक लगातार सफल प्रकाशन प्रबन्धक के लिए जिला परिषद् किन्नौर की ओर से हार्दिक शुभकामनाएं।

कुल जिला परिषद् वार्ड - 10

क्र0 सं0	वार्ड का नाम	सम्बन्धित पंचायत
1.	पूह 1.	सुमरा 2. शलखर 3. चांगो 4. नाको 5. लियो 6. हांगो 7. नमज्ञा 8. पूह
2.	मूरंग 1.	1. रोपा 2. ज्ञाबुग 3. सुन्नम 4. लाबरंग 5. कानम 6. नेसंग 7. मूरंग 8. ठंगी 9. चारंग
3.	रिब्बा 1.	1. रिब्बा 2. रिस्पा 3. जंगी 4. रारंग 5. स्पीलो 6. लिप्पा 7. आसरंग
4.	खवांगी 1.	1.कोठी 2. ख्वांगी 3. पूर्वनी 4. तेलंगी
5.	सांगला 1.	कमरू 2. सांगला 3. मैमेगारंग 4. बटसेरी 5. रकछम 6. छितकुल
6.	सापनी 1.	चांसू 2. शौंग 3. ब्रआ 4. सापनी 5. किल्बा 6. मेबर 7. पवारी 8. बारंग
7.	कल्पा 1.	रोगी 2. कल्पा 3. दूनी 4. पंगी 5. शुद्धारंग
8.	चगांव 1.	भुला 2. मीक 3. उरनी 4. चगावं 5. शमणी 6. पूजंग 7. अगपा 8. काफनू
9.	सुंगरा 1.	पानवी 2. निचार 3. सुंगरा 4 पौल्डा
10.	तराण्डा 1.	कटगांव 2. नाथपा 3. छोटा

वर्तमान में जिला परिषद किन्नौर का गठन वर्ष 2015-16 में पंचायतों के सामान्य निर्वाचन के तहत हुआ है जिसमें कुमारी प्रतिश्वरी देवी अध्यक्षा जिला परिषद्, श्रीमती मीनाक्षी देवी उपाध्यक्षा तथा श्री विजय कुमार, श्री दौलत राम, श्री श्याम लाल, श्री केवल राम, श्रीमती टाशी यंगजेन, श्रीमती सत्या देवी व कुमारी हीरा देवी जिला परिषद सदस्य हैं।

जिला में कुल विकास खण्ड - तीन पंचायत समिति - तीन

विकास खण्ड	पंचायत समिति सदस्यों की संख्या	कुल ग्राम पंचायत	पंचायत वार्ड
1. कल्पा	15	23	128
2. पूह	15	24	127
3. निचार	15	18	100
कुल	**45**	**65**	**355**

विकास कार्यः

जिला परिषद् की सामान्यत: बैठकें - 4 अन्य विशेष परिस्थिति में भी होती है।

1. जनवरी 2018 से जुलाई 2018 तक जिला परिषद् द्वारा जिला की 65 पंचायतों के विकासात्मक कार्यों के लिए मनरेगा के अंतर्गत अनुमोदित बजट 6412.95 लाख

जिसमें विकासखण्ड पूह के लिए - रू0 1247.45 लाख
विकासखण्ड कल्पा के लिए - रू0 960.24 लाख
विकासखण्ड निचार के लिए - रू0 4205.26 लाख

2. (1) जिला परिषद् किन्नौर हेतु राज्य वित्तायोग द्वारा वर्ष 2017-2018 के लिए स्वीकृत राशि रू0 6065861 लाख
(2.) जिला परिषद् किन्नौर हेतु राज्य वित्तायोग द्वारा वर्ष 2018-2019 के लिए स्वीकृत राशि रू0 6551130 लाख

जिला को सम्बन्धित सभी पंचायतों के विकास कार्यों के लिए खर्च किया जाना है।

1. 14वां वित्तायोग को वर्ष 2017-18 में मु0 7,59,14,183 रू0 राशि की योजनाएं जिला परिषद् की विभिन्न ग्राम पंचायतों हेतु जारी की गई है।
2. स्वीकृत राशि का सीधा सम्बन्धित पंचायतों के खाते में।
3. अध्ययन जिला परिषद् द्वारा स्वच्छ भारत मिशन के अंतर्गत 2018-19 में मु0 263.59 लाख का बजट, सभी सम्बन्धित पंचायतों को अनुमोदित किया गया है।
4. जिला परिषद् हिमाचल प्रदेश पंचायती राज अधिनियम 1994 व तत सम्बन्धी हिमाचल प्रदेश पंचायती राज (सामान्य) नियम 1997 व वित्त नियम 2002 के तहत प्रदत शक्तियों के अंतर्गत कार्य करती है। हिमाचल प्रदेश सरकार के अधिसूचना संख्या पी0सी0एच0 -एच0ए0 (1) 12 / 87 -10206 - 406 दिनांक 31.03.1996 के तहत पंचायती राज संस्थाओं के तीनों स्तरों (1) ग्राम पंचायत (2) पंचायत समिति (3) जिला परिषद् को सरकार के विभिन्न विभागों बारे शक्तियों कार्यों एवं दायित्वों के निवार्हन के लिए अधिकृत विभाग गया है।
5. इसके अतिरिक्त सचिव जिला परिषद् साथ-साथ जिला पंचायत अधिकारी के कर्तव्यों का निर्वाहन करते हैं। जिसमें ग्रामीण विकास विभाग की विभिन्न सूचनाओं का सकल्न एवं प्रेषण पंचायतों का एवं निरिक्षण पंचायतों से सम्बन्धित जांच तक विभिन्न तरह के पंचायत प्रतिनिधियों के प्रशिक्षण करवाऐ जाते हैं।
6. पंचायती राज संस्थाओं के सामान्य निर्वाचन व उप-निर्वाचन रिक्त पद होने पर प्रत्येक छ: माह बाद करवाऐ जाते है।

जारीकर्ता:

अध्यक्ष
जिला परिषद् किन्नौर
हिमाचल प्रदेश

सचिव
जिला परिषद् एवं जिला पंचायत अधिकारी
जिला किन्नौर स्थित रिकॉंगपिओ

नेपाल की एक ग्राम पंचायत ने की मिसाल कायमः गाय को मिलेगा प्रसूति भत्ता

नेपाल की एक ग्राम पंचायत ने की मिसाल कायम

गाय को मिलेगा प्रसूति भत्ता

गाय को हम गौ कहते है, परंतु वास्तव में उन्हें गौ कहने का अधिकर नेपाल की सिदिंवा पंचायत को है। सिदिंवा शायद विश्व की पहली पंचायत है, जिसने गायों को मातृत्व का अधिकार प्रदान किया है। पिछले दिनों सिदिंवा ग्राम पालिका ने एक प्रस्ताव पारित किया है कि उसके क्षेत्र के जिस भी किसान के घर गाय ब्याएगी, उस किसान को गाय और उसके बच्चे के समुचित देख-रेख के लिए बीस हजार रूपये प्रसूति भत्ता दिया जाएगा।

ग्राम पालिका ने यह निर्णय गाँवों में पशुपालन को प्रोत्साहन देने के लिए लिया हैं। इसके बदले में शर्त रखी गई है कि किसान को प्रत्येक दिन उस गाय से न्यूनतम सात लीटर दूध निकालना होगा। इसमें एक शर्त यह भी है कि ब्याने के पहले छह महीने में गाय के केवल दो थन और उसके बाद केवल तीन थन से ही दूध निकालना होगा, ताकि उसके बच्चे को भरपूर दूध मिल सके। यह शर्त इसलिए है कि किसान भत्ते की राशि का प्रयोग प्रसूता गाय की देखभाल में ही करे. वहां के पशु चिकित्सकों का मानना है कि स्थानीय नस्ल की गाय को भी यदि अच्छा खाने को मिले तो वह सात लीटर दूध आसानी से दे सकती हैं। इसके लिए गाय विटामिन आदि से युक्त पौष्टिक खाना खिलाने की जानकारी भी किसान को दी जा रही हैं। किसानों ने इस योजना को हाथों-हाथ लिया है और इससे उत्साहित होकर ग्रामपालिका ने अगले वित्तीय वर्ष में इसका बजट तीन गुना करने की योजना बनाई है। पहले यहाँ के गाँवों में खूब पशुपालन होता था, परंतु बीच में वह परंपरा टूट गई थी। उस पुरानी परंपरा को फिर से स्थापित करने के लिए ग्रामपालिका ने यह पहल की है। यह खबर नेपाली समाचार पत्र, कांतिपुर में छपी है।

गाय को हम मां कहते हैं, परंतु वास्तव में उन्हें मां कहने का अधिकार नेपाल की सिदिंवा पंचायत को है। सिदिंवा शायद विश्व की पहली पंचायत है, जिसने गायों को मातृत्व को अधिकार प्रदान किया है। पिछले दिनों सिदिंवा ग्राम पालिका ने एक प्रस्ताव पारित किया है कि उसके क्षेत्र के जिस भी किसान के घर गाय ब्याएगी, उस किसान को गाय और उसके बछड़े/बच्छी के समुचित देख-रेख के लिए बीस हजार रूपए प्रसूति भत्ता दिया जाएगा। ग्राम पालिका ने यह निर्णय गांवों में पशुपालन को प्रोत्साहन देने के लिए लिया है। इसके बदले में शर्त रखी गई है कि किसान को प्रत्येक दिन उस गाय से न्यूनतम सात लीटर दूध निकालना होगा। इसमें एक शर्त यह भी है कि ब्याने के पहले छह महीने में गाय के केवल दो थन और उसके बाद केवल तीन थन से ही दूध निकालना होगा, ताकि उसके बच्चे को भरपूर दूध मिल सके। यह शर्त इसलिए है कि किसान भत्ते की राशि का प्रयोग गोपालक प्रसूता गाय की देखभाल में ही करे। वहां के पशु चिकित्सकों का मानना है कि स्थानीय नस्ल की गाय को भी यदि अच्छा खाने को मिले तो वह सात लीटर दूध आसानी से दे सकती हे। इसके लिए गाय विटामिन आदि से युक्त पौष्टिक खाना खिलाने की जानकारी भी किसान को दी जा रही है। किसानों ने इस योजना को हाथों-हाथ लिया है और इससे उत्साहित होकर ग्राम पालिका ने अगले वित्तीय वर्ष में इसका बजट तीन गुना करने की योजना बनाई है। पहले यहां के गांवों में खूब पशुपालन होता था, परंतु बीच में वह परंपरा टूट गई थी। उस पुरानी परंपरा को फिर से स्थापित करने के लिए ग्रामपालिका ने यह पहल की है। यह खबर नेपाली समाचार

पौधें के लिए समर्पित किया जीवन, विदेश तक बनाई पहचान

इन्हें आप पौधों का सच्चा दोस्त कहिए या फिर जंगल और प्रकृति के लिए जीवन समर्पित करने वाला एक मेहनतकश इंसान। मदन बिष्ट के लिए पौधा परिवार के उस बच्चे की तरह है जिसे पालने को जिम्मेदारी का एहसास होना जरूरी है। तभी फल मिलता है। 13 साल पहले वन विभाग के इस कर्मचारी ने 'वन मैन आर्मी' की तर्ज पर उत्तराखंड के हल्द्वानी में जड़ी-बूटियों का संसार बसाने की ठानी थी और आज उस मेहनत के परिणाम से सिर्फ अपना देश ही नहीं अपितु कनाडा, ताइवान, सिंगापुर, ब्रिटेन और अमेरिका तक प्रभावित है। मदन बिष्ट वन अनुसंधान केंद्र, हल्द्वानी के प्रभारी हैं। वन विभाग की इस नर्सरी में दुर्लभ पौधों की जो वाटिका उन्होंने अथक श्रम से तैयार की है, उसके पौधों की मांग अब विदेश तक है। खासकर कासनी का पौधा, जिसे कई रोगों के इलाज में कारगर माना गया है, उसे लेने लोग हल्द्वानी की इस नर्सरी का रूख करते हैं। नर्सरी को आकार देने की खातिर इन 13 सालों में मदन ने एक भी दिन का अवकाश नहीं लिया। चाहे दिवाली हो, होली का त्यौहार या फिर कोई अन्य पर्व। उनकी दिनचर्या पौधों के साथ गुजरी। प्रतिदिन 10 से 12 घंटे तक नर्सरी में की गई मेहनत का नतीजा यह है कि आज 150 प्रजाति के दुर्लभ पौधे यहां सांस ले रहे हैं। ग्रह, नक्षत्रों के पौधों की वाटिका बनी है।

विलुप्ति की कगार पर पहुंचे पौधे, जो अब नर्सरी की शान हैं : ढाक, सांदन, नीम, चंदन, विजासाल, सैन, बरगद, पाखड़, पीपल, कुम्मी, पारिजाता, थनेला, सलई, पूजा, सेमल, पचनाला, तेंदू, काला शीशम, उम्मर, महुआ, ओमसाल, बरना, कैंच, गूलर, बेर शम्मी, मैनफल, फालसा, रीठा, बेल, चिरौंजी, अग्निमंथा, आमड़ा, सर्पदंशी, अंकोल, खटाई, मकमल, अर्जुन, बांस, चमरोड़।

❖ साभारः त्रिकुटा संकल्प

गांव की मिट्टी

गांव की मिट्टी
सोंधी खुशबू
लोक रंग में
रचा-बसा
ग्रामीण जीवन
जब कोई गबरू
बांसुरी बजा कर
निकालता है
लोकधुन
तब
हर्ष व उल्लास से
झूम उठता है
मन
ढोल की थाप पर
थिरकते पांव
बरबस ही
ले लेते हैं
लोक नृत्य का
रूप
नाटी हो या झमाकड़ा
हाथों में हाथ
थाम कर
नृत्य करने से
होती है
विशेष आनन्द की
अनुभूति

गोधूलि बेला में
लौटती हैं गऊएं
चर-चुग कर
रंभाती-धूल उड़ातीं
घर के आंगन में आकर
चाटती-घूमती हैं
बछड़े-बछड़ियों को
और
पिलाती हैं दूध
अपने थनों से
प्रकृति की
गोद में पला
यह
जनजातीय
व
ग्रामीण समाज
पशु-पक्षी
पेड़-पौधे
पहाड़-नदियां
हवा-सूरज
चांद-सितारे आदि का
सानिध्य पाकर
बढ़ता है
अपने
जीवन-पथ पर।

राम प्रसाद शर्मा 'प्रसाद'
सिहाल (कांगड़ा) हि0प्र0

पलच्छ बरखा दा

दिखा माह्णुओ बरखा कदेया, कहर तरती पर ढाया
चोंई बख्खे होआ पाणी-पाणी, कदेया पल्च्छ भरपाया।

खड्डा-नालू खतरे नसाणे, खिसका करदे पआड़,
रूकीएईयां माह्णुओं बत्तां दिखा ईना लैंड स्लाडिगां
ढाया कहर।
रूड़ीए जाड़-वसूंट सारे थां -थां आईयो बाढ़,
गड़ीयां मोटरां दे रूकीए रस्ते, लोई आए सड़काच पआड़।

रूढ़ी आंदे दिखा माह्णु मियो, नालुयां -खोलुयां टप्पदे,
छोरू छोकरू भी रूड़ा करदे फाटो- सैलफियां खिचदे।

दरकिया दे पआड़, अपणे घरद्वार गेयो दबोई,
डुब्बी एईयां गौशला मतीयां, डंगरे मरीए घटोई।

बड़े-बड़ शहर दिखा, पाणी कन्नै गेओ भरोई,
ग्रां दे ग्रां माह्णुओं, पाणीए थल्ले गे डुबोई।

अणमुक गेईयां जिन्दां मेयो, मुक्कीए कुल कितणे सारे,
नां नसाण नी रेया तिणां दा, उचे थे जेहड़े चवॉरे।

टुट्टीईयां सड़कां रूडीए पुल बणीए ओथु खड्डां नाले,
कुथु मिलणे उण मेरीए जिन्दे जेहडे, रूडीए दिलां दे प्यारे।

रूड़ी, डुबी, ढेई गेईयां फसलां रूड़ी गेए कन्नै खेत्र,
बांअ-बांअ करदे फिरदे डंगरे, जिनांओ गलांदे फलेत्र।

दिखा माहणुओ बरखा कदेया, कहर तरती पर ढाया,
चोंई पासे होआ पाणीं पाणी, कदेया पलच्छ भरप्पाया।

सुषमा देवी, गांव व डाक भरमाड़
तह0 ज्वाली, कांगड़ा।

शराफत

समझदार लोग
अपनी शराफत बचाने लगे हैं
चालाक लोग
चालबाजियों से कमाने लगे हैं
अक्ल के.....

बैठे चौपट कर सब धन्धे
कलियुग में धार्मिकों को
जालिम सताने लगे हैं।

कश्मीर सिंह,
रजेरा चम्बा (हि0प्र0)

बनें नागरिक पत्रकार

अपने क्षेत्र की कोई विशेष जानकारी/घटना आप पाठकों से साझा करना चाहते हैं तो मातृवन्दना कार्यालय को अवश्य अवगत करवाएं। हम उसको अपनी पत्रिका में प्रकाशित करने का प्रयास करेंगे।

गन्ने की खेती कर रहे हैं दोबारा बिलासपुर के किसान

-जगदीश कुमार जमथली

यदि बिलासपुर जिले की बात करें तो 20-25 वर्ष पहले कई गांव में गन्ने की खेती की जाती थी। जैसे जमथल, हरनोड़ा, बाहोट कसोल, पंजगाई, धार-टटोह, जुखाला आदि गांव। हरनोड़ा के साथ नदी पार के गांव सनीहन (तह0 सुन्दरनगर) में भी गन्ने की खेती की जाती थी। जमथल, हरनोड़ा, कसोल, सनीहन आदि गांव में लोग दूर-दूर से शक्कर खरीदने आते थे। ये गांव शक्कर के कारण चर्चा में रहते थे। शक्कर का उत्पादन इन गांव की अर्थव्यवस्था की रीढ़ हुआ करता था। ये लोग शक्कर बेचकर अन्य खर्चों को पूरा करते थे। लेकिन बीच में कुछ ऐसा समय भी आया कि इन ग्रामों में कुछ लघु किसानों ने इस खेती को बंद कर दिया और ये खेती कुछ किसानों तक ही सिमट कर रह गई।

जिसका कारण आधुनिकता की चकाचौंध, काम अधिक दाम कम, जानवरों द्वारा फसल उजाड़ना या संयुक्त परिवारों का बिखरना हो सकता है। लेकिन वर्तमान में फिर से जमथल, हरनोड़ा, बाहौल कसोल और सलापड़ के सनीहन गांव में यह खेती की जा रही है तथा किसान मुनाफा कमा रहे हैं। आज से 40-45 वर्ष पहले एक पुड़ी की कीमत 2 रूपए होती थी। 25-30 वर्ष पहले 100-150 तथा बाद में 300 रूपए, वर्तमान में एक पुड़ी 600 रूपए में बिक रही है। एक पुड़ी में 24 कि0ग्रा0 शक्कर आती है। एक बीघा में 20-25 पुड़ी उपज हो जाती है। किसान शक्कर कैसे तैयार करते हैं इस बात को हम निम्नलिखित बिन्दुओं के माध्यम से जान पाएंगे।

बीज व बीजाई:- जब शक्कर बनाने के लिए गन्ना काटा जाता है उसी गन्ने के ऊपरी हिस्से को काटकर बीज निकाला जाता है। एक क्विंटल बीज की कीमत एक पुड़ी की आधी होती है। बीज की दवाई लगाकर मिट्टी में आधा भाग दबाया जाता है। बीजाई मार्च-अप्रैल में की जाती है।

खेत की तैयारी:- खेत की मिट्टी को दो-तीन बार हल जोतकर नरम किया जाता है, फिर बीज को दवाई में मिलाकर बीजाई की जाती है। यदि दवाई पाउडर की तरह हो उसकी बीजाई के साथ-साथ डाला जाता है ताकि बीज को दीमक न लगे। बीजाई के पश्चात् गोबर की खाद डाली जाती है। इस फसल के लिए गोबर की खाद सर्वोत्तम होती है।

बीजाई के बाद:- बीजाई के पश्चात् जब बीज उग आता है और ईख की शक्ल ले लेता है तो उसमें एक या दो बार निराई-गुड़ाई की जाती है। ईख की लम्बाई बढ़ने पर उसको बांधा जाता है ताकि हवा से ईख गिरे नहीं। ईख के निचले हिस्से के पत्तों को तोड़कर खेत से खरपतवार हटाया जाता है तथा पत्तों का पशुओं के लिए चारे के रूप में प्रयोग किया जाता है। 9-10 माह में फसल तैयार हो जाती है। जनवरी से मार्च गन्ने की पीलाई की जाती है।

पीलाई की तैयारी:- जनवरी माह में पीलाई शुरू हो जाती है। शक्कर बनाने के लिए निम्नलिखित कार्य किए जाते हैं।

क. बण (भट्टी) शक्कर बनाने के लिए सबसे पहले बण तैयार किया जाता है। उसके लिए मिट्टी को निकालकर एक बड़ा गड्ढा खोदा जाता है। फिर उसमें अन्दर से पत्थर या ईंटों को लगाया जाता है। बाहर से मिट्टी लगाई जाती है। एक तरफ से ईंधन डालने का स्थान बनाया जाता है। दूसरी तरफ धुंआ निकालने के लिए जगह रखी जाती है। एक तरफ से राख निकालने का स्थान बनाया जाता है। बण की गोलाई एक कढ़ाई (लोहे का) के समान होती है।

ख. झूंगी बण के चारों तरफ एक झोंपड़ी बनाई जाती है। जो पहले घास-पत्तियों से बनाई जाती थीं, अब लोग पक्का कमरा बनाने लग गए हैं। बण भी आजकल स्थाई होते हैं।

ग. बेलणा एक बेलणे में लोहे के तीन बेलण होते हैं। इन तीनों बेलणुओं को पहले से ही मिट्टी में दबाए गए हिस्से के ऊपर जोड़ा जाताहै। तीनों बेलणुओं की गरारियां आपस में जोड़ी जाती है। जिनको घुमाकर गन्ने से रस निकाला जाता है।

घ. गादल तीनों बेलणुओं के ऊपरी हिस्से में गादल लगाई जाती है जो लकड़ी की बनाई जाती है। गादल की लम्बाई 9-10 फिट होती है। अब वर्तमान में गादल की जगह ईंजन का प्रयोग होता है।

खात्ती बेलणे के पास छोटा गड्ढा खोदकर खात्ती बनाई जाती है। गड्ढे में पीपा रखा जाता है। एक पीपे में 15 से 16 लीटर रस आ जाता है। खात्ती के पास ही गन्ना रखने का स्थान होता है। पहले बैलों को गादल से जोड़कर बेलणा खिंचा जाता हथा। एक बैल जोड़ी 6-7 पीपे रस.....

शेष पृष्ठ 29 पर ....

शाम के वक्त अपनाएं ये 2 नुस्खे, घर के आसपास भी नहीं आएंगे मच्छर

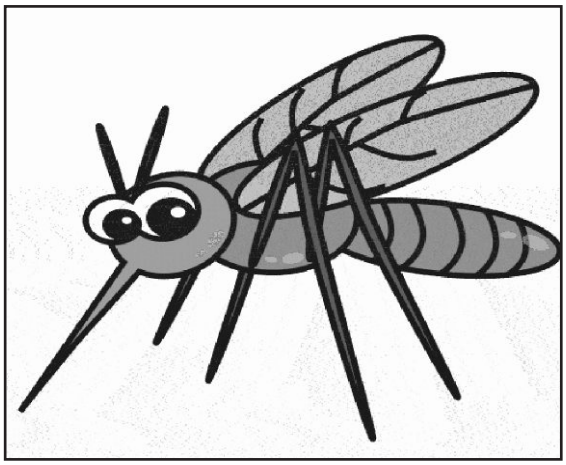

मानसून के वक्त मच्छरों का पनपना जैसे आम बात होती है। तुलसी का पौधा भी मच्छरों को भगाने में काफी कारगार है। बहुत से लोगों के घरों में खाने के लिए सोयाबीन का तेल इस्तेमाल किया जाता है। मानसून के वक्त मच्छरों का पनपना जैसे आम बात होती है। न चाहते हुए भी शाम के वक्त से ही घर मच्छरों से भरने लगता है। मच्छर के काटे स्थान पर खुजली होती है और त्वचा लाल हो जाती है। मच्छर कई गंभीर बीमारियों को भी जन्म देते हैं। यह परिस्थिति काफी परेशान करती है। लेकिन, क्या पता है कि आप परेशानी से निजात पा सकते हैं और वो भी कुछ आसान से घरेलू उपायों के जरिये। आज हम मच्छरों को भगाने और इनके बचने के उपाय बता रहे हैं। आइए जानते हैं क्या हैं ये उपाय।

मच्छर भगाने के उपाय

सीडीसी 'सेंटर फॉर डिसीज कंट्रोल' द्वारा सिफारिश किया गया नींबू के तेल और नीलगिरी के तेल को मिलाकर लगाने से मच्छरों से बचा जा सकता है। नींबू के तेल और नीलगिरी के तेल के असर करने की वजह एक सक्रिय घटक सिनियोल है, जो त्वचा पर लगाने पर एंटीसेप्टिक और कीट विकर्षक दोनों के गुण देता है।

कई शोधों में यह प्रमाणित हो चुका है कि लौंग के तेल की महक से मच्छर दूर भागते हैं। लौंग के तेल को नारियल तेल में मिलाकर त्वचा पर लगाएं, इसका असर ओडोमॉस से कम नहीं होगा। लौंग का तेल बाजार में काफी आसानी से मिल भी जाता है। भविष्य में मच्छरों से बचने के लिए एक बार लौंग का तेल जरूर उपयोग करके देख लें।

बहुत से लोगों के घरों में खाने के लिए सोयाबीन का तेल इस्तेमाल किया जाता है। ये तेल न सिर्फ आपके खाने को स्वादिष्ट बनाने में काम आता है बल्कि आपको मच्छरों के काटने से भी बचा सकता है। इसके लिए, सोयाबीन के तेल से त्वचा की हल्की मसाज करें। इससे मच्छर दूर रहेंगे। इसके अलावा इस चीज के लिए यूकोलिप्टस का तेल भी बहुत कारगर है। पैरासाईटोलौजी रिसर्च जर्नल में प्रकाशित आंकड़ों के अनुसार तुलसी मच्छर के लार्वा को मारने में अत्यंत प्रभावी है और मच्छरों को दूर रखने में मदद करती है। इसके अलावा, आयुर्वेद के अनुसार आप मच्छरों से बचने के लिए बस अपनी खिड़की के पास एक तुलसी का पौधा रखें। यह मच्छरों का घर में प्रवेश करने से रोकते हैं। ❖ **साभार: ओन्ली माई हैल्थ**

Dr. Hem Raj Sharma

Specialist in Kshar Sutra Therapy
(Piles, Fistula, Anal Polyps, Prolapse Rectum, Pilonidal Sinus)
Formerly Incharge Medical Officer,
DAH Una, Govt. of Himachal Pradesh
NATIONAL CHIKITSAK GURU

RAV (National Academy of Ayurved) New Delhi
Under Ministry of Health & Family Welfare, Deptt. of Ayush, Govt. of India.
B.Sc. HPU Shimla, GAMS, MD, University Rohtak, PGD Health & Family welfare, Punjab Uni. Chandigarh CC. Yog & Naturalpathy, Gujrat University, Jamnagar, CRAV Kshar-Sutra Specialisation, New Delhi

"सर्वे भवन्तु सुखिनः, सर्वे सन्तु निरामयाः"

JAGAT HOSPITAL
&
Kshar Sutra Centre

Near Govt. College, Nangal Road, Una (H.P.)
Pin : 174303
94184-88660, 88940-68358, 94593-88323

राष्ट्रीय नागरिक रजिस्टर यानी एनआरसी की अंतिम मसौदा सूची प्रकाशित

30 जुलाई, 2018 का दिन असम के इतिहास में दर्ज हो गया। इस दिन एनआरसी की दूसरी व अंतिम मसौदा सूची प्रकाशित हुई। सूची में भारतीय नागरिकों के रूप में 2 करोड़ 89 लाख 83 हजार 677 लोगों के नाम शामिल किए गए। जबकि 40 लाख 7 हजार 708 लोगों के नाम इसमें शामिल नहीं किए गए। एनआरसी में नाम शामिल कराने के लिए कुल 3 करोड़ 29 लाख 91 हजार 384 लोगों ने आवेदन किया था। उल्लेखनीय है कि पहली मसौदा सूची में 1 करोड़ 90 लाख लोगों के नाम शामिल हुए थे। बाद में देश के महापंजीयक ने उच्चतम न्यायालय में एनआरसी पर सुनवाई के दौरान बताया कि पहली मसौदा सूची में कुछ डी वोटर्स के परिजनों के नाम शामिल हो गए हैं। जिस पर न्यायालय ने उन सभी नामों को बाहर करने का निर्देश दिया। इसके चलते दूसरी मसौदा सूची के प्रकाशन के दौरान पहली मसौदा सूची में शामिल एक लाख 50 हजार लोगों के नाम काटकर बाहर कर दिए गए। प्रतीक हाजेला ने बताया है कि कुल दो लाख 48 हजार लागों के नामों को स्थगित किया गया है, जिनके नाम डी वोटर या फिर विदेशी न्यायाधिकरणों में मामले लंबित हैं। एनआरसी प्रबंधन ने साफ कहा है कि जिन लोगों के नाम काटकर बाहर किए गए हैं, उन सभी लोगों को नोटिस भेजकर बताया जाएगा कि उनका नाम क्यों काटा गया है।

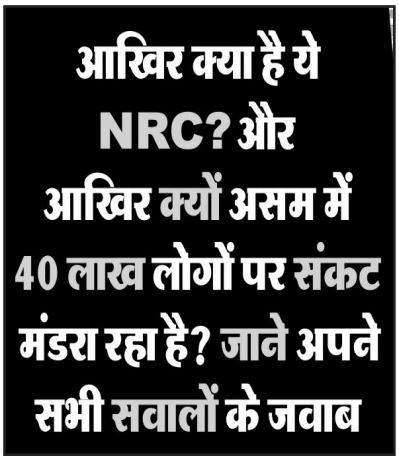

देश के महापंजीयक शैलेश तथा गृह मंत्रालय के पूर्वोत्तर मामलों के संयुक्त सचिव सत्येंद्र गर्ग तथा एनआरसी के असम समन्वयक प्रतीक हाजेला ने संयुक्त रूप से एनआरसी के मुख्यालय में एनआरसी की दूसरी मसौदा सूची जारी की थी महापंजीयक के अनुसार इस मसौदा सूची के प्रकाशन के बाद किसी को भी आतंकित होने की आवश्यकता नहीं है। आपत्ति दर्ज कराने के लिए लोगों को आवश्यक सुविधा मुहैया कराई जाएगी। वैध भारतीय नागरिकों के नाम एनआरसी में शामिल किए जाएंगे।

एनआरसी की आवश्यकता क्यों

बांग्लादेश और असम के मुसलमानों की भाषा, वेशभूषा और बनावट एक ही है। अगर बांग्लादेश (तत्कालीन पूर्वी पाकिस्तान) का कोई नागरिक आकर असम में बस जाए तो उसकी पहचान करना कठिन हो जाएगा। इस चिंता का सबसे बड़ा कारण असम में जनसंख्या का कम होना और तत्कालीन पूर्वी पाकिस्तान (बांग्लादेश) में अधिक होना था। दूसरा बड़ा कारण असम की सीमावर्ती राज्य होना और इसका 60 से 70 किलोमीटर के गलियारे से पश्चिम बंगाल से जुड़ा होना भी था। इन तमाम बातों के मद्देनजर भारतीय नागरिकों की पहचान को सुनिश्चित करने के लिए सरदार वल्लभ भाई पटेल ने सिर्फ असम के लिए एनआरसी की प्रक्रिया का प्रावधान किया था। नेशनल रजिस्टर ऑफ सिटीजन (राष्ट्रीय नागरिकता रजिस्टर) केवल असम में ही है। देश के अन्य किसी राज्य में इसकी कोई व्यवस्था नहीं है। देश के अन्य नागरिकों के लिए यह अबूझ पहेली सी है। आजादी के साथ ही देश का विभाजन हुआ। देश का विभाजन मोहम्मद अली जिन्ना की मांग के आधार पर हुआ। किंतु इसे तार्किक परिणाम तक लागू नहीं किया गया। देश के विभाजन के बाद साम्प्रदायिकता की समस्या जस की तस बनी रही।

भाजपा एनआरसी को लागू करने के लिए प्रतिबद्ध है, क्योंकि यह राष्ट्रीय सुरक्षा से जुड़ा है। देश की सुरक्षा पर वोट बैंक की राजनीति हावी हो गई है। बांग्लादेशी घुसपैठिए देश की सुरक्षा के लिए खतरा है, इसलिए कांग्रेस सहित प्रत्येक राजनीतिक दल को उनके बारे में अपना रूख साफ करना चाहिए। ममता बनर्जी स्पष्ट करें कि वह किस तरह के गृह युद्ध की बात कर रही है। उन्हें वोट बैंक के अलावा कुछ भी नहीं दिखता है। हम राष्ट्रहित देखते हैं। देश के नागरिकों को घबराने की आवश्यकता नहीं है। जो छूट गए हैं, उनको पूरा मौका दिया जा रहा है। ❖ **साभारः युगवार्ता**

मृदुला श्रीवास्तव ने पढ़ा मॉरिशस में शोधपत्र

मॉरीशस में आयोजित 11वें विश्व हिंदी सम्मेलन में प्रदेश की दो महिला साहित्यकार डॉ. रीता सिंह सदस्य केन्द्रीय वित्त मंत्रालय हिन्दी सलाहकार समिति और मृदुला श्रीवास्तव सम्प्रति सतलुज जल विद्युत निगम वरिष्ठ प्रबंधक राजभाषा मृदुला श्रीवास्तव ने अपना-अपना शोधपत्र पढ़कर हिमाचल को गौरवान्वित किया है। 18 से 20 अगस्त तक आयोजित हिंदी के आयोजन में इस वर्ष हिमाचल से अन्य साहित्यकार भी सम्मिलित हुए। मृदुला श्रीवास्तव की कहानियां देश में हिंदी की प्रतिष्ठित साहित्यिक पत्रिकाओं के अलावा मारीशस में भी प्रकाशित हुई हैं। अन्य विदेशी भाषाओं में उनकी कहानियों का अनुवाद हुआ है। उनकी लिखी पुस्तक काश पंडोरी न होती शिमला पुस्तक मेले में पाठकों ने अधिक मात्रा में खरीदी। उनकी लघु कथाएं, व्यंग्य कथाएं और बाल कथाएं भी राष्ट्रीय पत्रिकाओं में प्रकाशित हो चुकी हैं। ❖

मुस्लिम लड़कियों के निकाह को 25 हजार देगी सरकार

प्रदेश सरकार वक्फ बोर्ड के माध्यम से गरीब मुस्लिम परिवारों की लड़कियों के निकाह को 25 हजार रूपये अनुदान देगी। मुस्लिम परिवारों को चिकित्सा उपचार के लिए पांच हजार रूपये की वित्तीय सहायता और वृद्धजनों, महिलाओं और शारीरिक रूप से अक्षम मुस्लिम लोगों को 400 रूपये प्रतिमाह सामाजिक सुरक्षा पेंशन दी जाएगी। यह बात मुख्यमंत्री जयराम ठाकुर ने चंबा में मुख्यमंत्री अल्पसंख्यक कल्याण योजना के शुभारंभ पर कही। उन्होंने कहा कि सरकार समाज के अल्पसंख्यक वर्ग के कल्याण के लिए वचनबद्ध है। सीएम ने कहा कि प्रदेश के अल्पसंख्यक वर्ग की राज्य के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका है। ❖

With best compliments from:

AMBE
TRADING CO.

Fruit & Vegetable Commission Agent
Shop No. 34, Subzi Mandi Bandrol, Kullu (H.P.)

Jiwa Nand
98168-00034, 88941-11066

Dolma
9418190743

With best compliments from:

Principal:

Himalayan
Public School
NERWA

Teh. Chopal, Distt. Shimla (H.P.)

हिमाचल प्रदेश शिक्षक महासंघ द्वारा शिक्षा निदेशालय शिमला के सभागार में गुरू वंदन कार्यक्रम का आयोजन किया जिसमें ऊपर मंच पर मुख्य अतिथि डॉ. अमरजीत शर्मा शिक्षा निदेशक एवं कार्यक्रम में उपस्थित शिक्षक व गणमान्य जन।

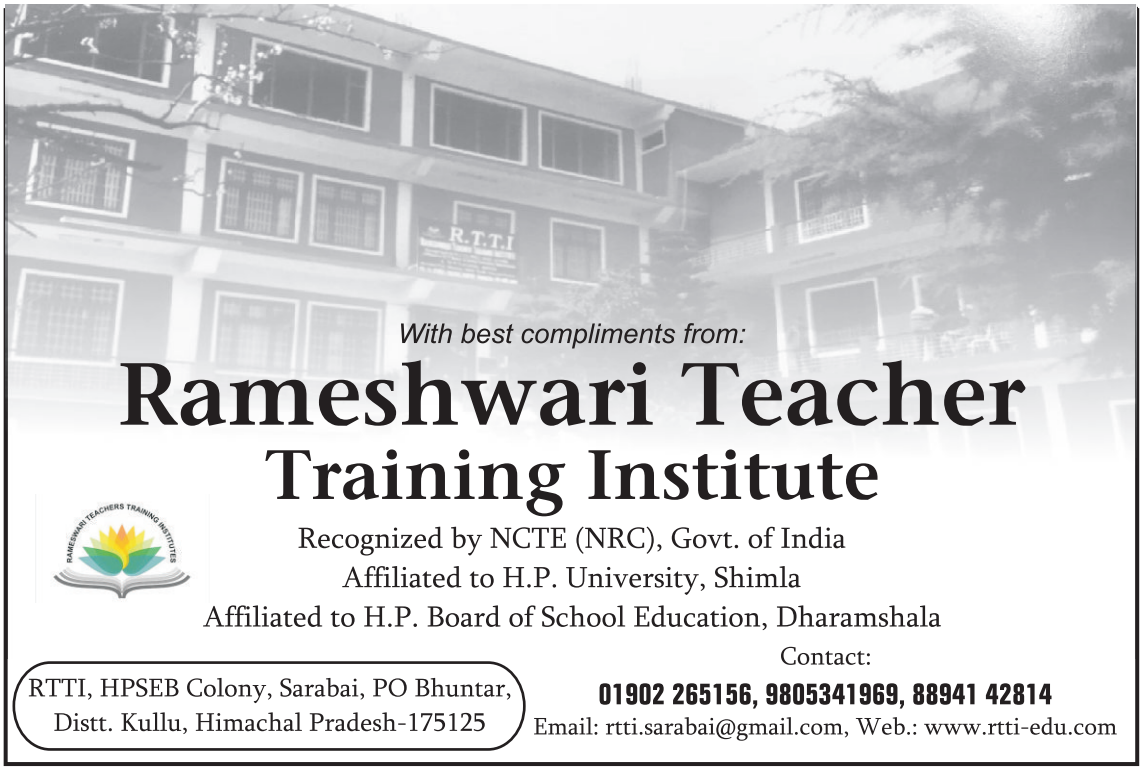

With best compliments from:

Rameshwari Teacher Training Institute

Recognized by NCTE (NRC), Govt. of India
Affiliated to H.P. University, Shimla
Affiliated to H.P. Board of School Education, Dharamshala

RTTI, HPSEB Colony, Sarabai, PO Bhuntar,
Distt. Kullu, Himachal Pradesh-175125

Contact:
01902 265156, 9805341969, 88941 42814
Email: rtti.sarabai@gmail.com, Web.: www.rtti-edu.com

With best compliments from:

AJAY Kullu

Kinnouri Shawls

- Dobhi, Kullu-1
- Dobhi, Kullu-2
- Gandhi Chowk Hamirpur
- Sanjauli Opp. Amartex Shimla
- Ram Bazar Opp. Jagat Guru Temple Shimla
- Exhibition Cum Sale Shop Mall Road Solan

AJAY KULLU KINNOURI & PASHMINA SHAWLS INDS.
Sultanpur Kullu (H.P.)

M: 98161-58833, 9816360070

मातृवन्दना (जागरण पत्रिका) संस्थान के रजत जयन्ती वर्ष के उपलक्ष में समस्त मातृवन्दना पाठक प्रबन्धन परिवार को पत्रिका के 25 वर्ष तक लगातार सफल प्रकाशन प्रबन्धक के लिए जीत कोच बस सर्विस शिमला की ओर से हार्दिक शुभकामनाएं।

जीत कोच
बस सर्विस सोलन

शिमला-शिलाई, सुबह 5.05 बजे

शिमला-कुपवी, सुबह 6.21 बजे

जारीकर्ता :

प्रोप. प्रताप ठाकुर
मो. 9418230683

पृष्ठ 29 का शेष ....

निकाल लेती है।

छ. ईंजन वर्तमान में ईंजन का प्रयोग गादल और बैल की जगह पर किया जाता है। ईंजन स्टार्ट करके बेलणे में गन्ना लगाकर रस निकाला जाता है।

ज. खवाड़ी आस-पड़ोस की सारी औरतें खवाड़ी लगाती है (सामूहिक रूप से गन्ना काटने को खवाड़ी कहते हैं) खवाड़ी सुबह 6 बजे ही लग जाती है जो दोपहर तक चलती है। जब किसी परिवार का गन्ना काटकर समाप्त हो जाता है, तो सभी औरतें एक जगह बैठकर गीत गाती है और उनको शक्कर बांटी जाती है। गीत गाने को तोता गाना या तोता उड़ाना कहते हैं।

झ. गौला गन्ने के ऊपरी हिस्से को काटकर पशुओं के लिए चारा निकाला जाता है। जिको गौला कहते हैं। गन्ने को औरतें सिर पर उठाकर बेलणे के पास छोड़ती है।

ञ. खेरा जिन गन्नों का रस निकाल लिया जाता है उसका बचा शेष पदार्थ खेरा कहलाता है, जिसे धूप में सूखाकर ईंधन के रूप में भट्टी में डाला जाता है।

ट. झोका ईंधन में प्रयुक्त सामग्री झोका कहलाती हे। एक कढ़ाई के लिए लगातार दो से अढ़ाई घण्टे तक झोका दिया जाता है।

ठ. खोतरी जिस खेत में गन्ना काटकर समाप्त हो जाता है उस खेत में बची सूखी पत्तियों को खोतरी कहते हैं। कुछ किसान इसका प्रयोग ईंधन के रूप में करते हैं परन्तु ज्यादातर खोतरी को खेत में ही जला देते हैं।

ड. कढ़ाई या कढ़ाह कढ़ाई लोहे की बनी होती है। इसमें एक पुड़ी के लिए 7 पीपे रस डाला जाता है। बड़े कढ़ाह में दो पुड़ी रस भी डाला जा सकता है। इसमें रस को गाढ़ा किया जाता है।

ढ. टीक शक्कर कढ़ाह में जब तैयार होने को आती है, तो उस समय टीक लगाई जाती है, जिसको घोटा भी कहते हैं। घोटा बनने का पता चलता है। घोटा लकड़ी का बना होता है।

ण. चाक यह चिकनी मिट्टी या लकड़ी का बना होता है। इसमें गर्म-गर्म शक्कर को डालकर ठण्डा किया जाता है।

त. थातु और तैंथा थातु और तैंथे से शक्कर बारीक की जाती है। थातु लकड़ी का तैंथा लोहे का बना होता है।

थ. पुड़ी जब शक्कर ठण्डी हो जाती है, तो पुड़ी में डाली जाती है एक पुड़ी में 24 कि0ग्रा0 शक्कर डाली जाती है। पुड़ी को टौर के पत्तों से बनाया जाता है। आजकल बोरे और गत्ते की पेटी का प्रयोग भी किया जाने लगा है।

द. पुणी और मलोरा पुणी रस पुणने का काम करती है। मलोरा चाक में शक्कर डालने से पहले लगाया जाता है। मलोरा आयुर्वेद औषधि भी है।

ध. शक्कर शक्कर को लोग घी और चावल के साथ मिलाकर बड़े चाव से खाते हैं। ❖

With best compliments from:

LOTUS INN
RIVERVIEW

Kanyal Road
Gadherni, Manali (H.P.)
Ph.: 70870-67861, 70870-67872
Web.: www.lotushotels.co.in

नव रचनाकारों के लिए शुभ सूचना

यदि आप स्थानीय लोक-संस्कृति, परंपरा, इतिहास, साहित्य व समसामयिक विषयों पर अपने विचारों को लेखनी के माध्यम से व्यक्त करना चाहते हैं तो मातृवन्दना आपको अवसर प्रदान करती है। तो कलम उठाइए और हो जाइए तैयार।

सम्पादक के नाम पत्र लेखन सूचना

प्रतिमाह सम्पादक के नाम सर्वश्रेष्ठ पत्र लिखने वाले पाठक को मातृवन्दना संस्थान की ओर से 500 रुपये पुरस्कार राशि या प्रभात प्रकाशन दिल्ली से उपर्युक्त राशि की पुस्तकें भेंट की जाएंगी।

केरल: सेवा के अग्रिम मोर्चों पर पहुंचे संघ के स्वयंसेवक

-नरेन्द्र सहगल

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के हजारों स्वयंसेवक अपनी जान को हथेली पर रखकर केरल में बाढ़ पीड़ितों की सहायता में दिनरात एक किए हुए हैं। इन स्वयंसेवकों ने दूरदराज के ग्रामीण बाढ़ग्रस्त इलाकों में जाकर सेना के जवानों, अर्धसैनिक बलों और स्थानीय पुलिस का सहयोग करते हुए सेवा के प्राय: सभी कार्यों को सम्भाला है। स्वयंप्रेरणा एवं नि:स्वार्थ भाव से सेवा कार्य में जुटे यह स्वयंसेवक किसी प्रमाणपत्र अथवा राजीनतिक वाहवाही से कोसों दूर हैं। केरल प्रांत में इस समय लगभग 3700 राहत शिविर चल रहे हैं, जिनमें लगभग 7 लाख लोगों को शरण दी गई है। लोगों को बाढ़ से घिरे हुए घरों से निकालकर राहत शिविरों तक पहुंचाने में संघ के स्वयंसेवक पूरी शक्ति के साथ सक्रिय हैं। केन्द्र की सरकार तथा अन्य प्रांतों की सरकारों द्वारा जो राहत सामग्री भोजन के पैकेट, पानी की बोतलें, दवाइयों के बंडल, वस्त्र एवं टेंट इत्यादि भेजी जा रही है, उसे शीघ्रता से जरूरतमंदों तक पहुंचाने में संघ के स्वयंसेवक निरंतर परिश्रम कर रहे हैं।

दुर्गम स्थानों तक पहुंचकर पीड़ितों की यथासंभव प्रत्येक प्रकार की मदद करते हुए आ रहे कष्टों का स्वयंसेवक पूरी हिम्मत से सामना कर रहे हैं। अपने कर्तव्य को निभाने वाले ये युवा स्वयंसेवक सैनिकों एवं सरकारी कर्मचारियों के साथ कंधो से कंधा मिलाकर चुपचाप काम में लगे हुए हैं। संघ के स्वयंसेवकों ने उन लोगों को भी सम्भाला और उनकी रक्षा की है जो संघ एवं स्वयंसेवकों के प्रबल विरोधी एवं शत्रु हैं। जिन साम्यवादी तत्वों ने स्वयंसेवकों का कत्लेआम करने की मुहिम चलाई हुई है, उनके परिवारों तक भी पहुंचकर उनकी सहायता कर रहे हैं संघ के स्वयंसेवक। केरल के हिन्दू मुस्लिम ईसाई इत्यादि समुदायों के पीड़ित लोगों की संघ के स्वयंसेवक बिना किसी भेदभाव के सेवा कर रहे हैं।

संघ को जी भर कर गालियां निकालने वाले दलों एवं संस्थाओं से पूछना चाहते हैं कि संकट की इस घड़ी में उनके कितने सदस्य केरल में गए हैं? दिन में कई बार आर. एस.एस को कोसने वाले राहुल गांधी के कितने साथी केरल में सेवा के लिए पहुंचे हैं, जरा बताएं? केरल में देश के कोने-कोने से सहायता पहुंच रही है। केन्द्र सरकार ने भी सहायता देने में कोई कसर नहीं छोड़ी परन्तु केरल में बाढ़ पीड़ित लोगों की सेवा न करके, सेवा के लिए लगे हुए लोगों पर राजनीति करने वाले दल एवं नेता जरा अपनी जान को जोखिम में डालकर वहां जाकर के तो देखें।

उल्लेखनीय है कि संघ के स्वयंसेवक ऐसी किसी भी प्राकृतिक विपदा और विदेशी आक्रमणों के समय पीड़ितों और सैनिकों की सहायता के लिए सबसे पहले पहुंच जाते हैं। यही अंतर है देशभक्त स्वयंसेवकों और सत्ता के भूखे संघ विरोधियों में। ❖

With best compliments from

SHIVALIK HOSPITAL

Near Police Lines, Jhalera, Una (H.P.)

Mob.: 98059-33644

Dr. Akshay Sharma

MBBS (MAMC Delhi) (Gold Medalist)
MS (MAMC Delhi) Regd. MCI-7841
General & Laproscopic Surgeon
Ex. Senior Registrar LNJP &
GB Pant Hospital New Delhi

Dr. Anupma Sharma

MBBS, MD (PGI Chandigarh)
SKIN SPECIALIST
Regd. PMC-28190

Facilities Available: General & Specialist OPD, Indoor Admission Facilities, Fully equipped Operation Theatre, All Major & Minor Operations, Laproscopic Gall bladder Removal, Nebulization therapy for Asthma, ECG/X-Ray, Blood Tests.

दखिण अफ्रीका में संस्कृत की अलख

दक्षिण अफ्रीका में भारतीय संस्कृति के प्रचार-प्रसार में जुटे डॉ. राम विलास ने डरबन यूनिवर्सिटी में भारतीय भाषा के शिक्षक के तौर पर संस्कृत को आगे बढ़ाया और अब प्राथमिक विद्यालय चलाकर नई पीढ़ी को भारतीय संस्कृति का परिचय करा रहे हैं। करीब 165 साल पहले डॉ. राम विलास के पूर्वजों को अंग्रेजों ने जबरन मजदूर बनाकर दक्षिण अफ्रीका भेजा। भारतीय मूल के डॉ. राम विलास वहीं पर रहकर पले बढ़े। इसके बावजूद भारतीय संस्कृति और देश की कसक उनके दिल में बनी रही। करीब 40 वर्ष पहले उन्होंने मेरठ कॉलेज से संस्कृत में एम.ए. किया। गुरूकुल प्रभात आश्रम टीकरी से संस्कृत की दीक्षा ली और लौट गए दक्षिण अफ्रीका। ❖ **साभार: राष्ट्रदेव**

बस अड्डों पर दिव्यांग, वृद्ध एवं बीमार यात्रियों के लिए व्हील चेयर

प्रदेश के बस अड्डों में अब दिव्यांगों, बीमार और वृद्ध यात्रियों को बेहतरीन सुविधाएं देने के लिए व्हील चेयर का इंतजाम किया जाएगा। ऐसे यात्रियों के साथ आए परिजनों को ये व्हील चेयर बस काउंटर पर मिलेंगे। परिजनों को यात्री को बस में बैठाने के बाद व्हील चेयर काउंटर पर लौटानी होगी। यही नहीं, सरकार ने बस अड्डों पर प्राथमिक चिकित्सा किट उपलब्ध कराने का फैसला भी लिया है ताकि आपात स्थिति में सवारियों को स्वास्थ्य सुविधा मुहैया हो सके। प्रदेश पथ परिवहन निगम शिमला, मंडी, मनाली और कांगड़ा बस अड्डों पर सेनेटरी वेंडिंग मशीन भी स्थापित करेगा। ❖

इंडियन आइडल के टॉप 12 में कोटगढ़ के अंकुश

हिमाचल के बेटे अंकुश भारद्वाज सोनी टीवी पर प्रसारित होने वाले रिएलिटी शो इंडियन आइडल में अपनी प्रतिभा दिखा रहे हैं। अपनी सुरीली आवाज के दम पर उन्होंने सबका मन मोह लिया है। राजधानी शिमला के कोटगढ़ निवासी अंकुश भारद्वाज ने इंडियन आइडल में टॉप 12 में जगह बना ली है। हिमाचल के लोग वोटिंग कर अंकुश भारद्वाज का हौंसला बुलंद कर रहे हैं। अंकुश का वीडियो इन दिनों सोशल मीडिया पर खासा वायरल हो रहा है। अंकुश अभी इंडियन आइडल के टॉप 12 में है। उनकी आवाज के दीवाने खुद बॉलीवुड गायक सोनू निगम भी रह चुके हैं। अंकुश ने एमबीए फाइनेंस की पढ़ाई करने के बाद म्यूजिक को अपना करियर बनाया है। अंकुश आजकल मुबई में बॉलीवुड म्यूजिक डायरेक्टर अमान मलिक के साथ बतौर असिस्टेंट काम कर रहे हैं। अंकुश ने हिमाचल की आवाज, 90.2 बिग एफएम गोल्डन वॉइस, विंटर कार्निवाल रफी नाईट, किशोर नाइट, संगम सुर संगीत जैसी स्पर्धाओं में भाग लेकर विजेता का खिताब हासिल किया है। अंकुश ने क्लासिकल संगीत की शिक्षा चन्ना म्यूजिक अकेडमी में विनोद चन्ना से ली है। ❖

प्रश्नोत्तरी

1. 2018 के एशियन खेल कहां आयोजित किये गए?
2. महिला कुश्ती में स्वर्ण जीतने वाली पहलवान का क्या नाम है?
3. विश्व हिंदी सम्मेलन कहां आयोजित किया गया?
4. डीआरडीओ के नवनियुक्त अध्यक्ष का नाम बताइए?
5. एशियाई खेलों में गोला फेंक में स्वर्ण जीतने वाले खिलाड़ी कौन हैं?
6. पूर्व प्रधानमंत्री स्व. अटल बिहारी वाजपेयी का समाधि स्थल का नाम क्या है?
7. स्पोर्टस ऑथोरिटी ऑफ इण्डिया द्वारा हि.प्र. में सेन्टर ऑफ एक्सीलेंस कहां बनाया जा रहा है?
8. वायु की गति मापने के लिए कौन सा यंत्र प्रयुक्त किया जाता है?
9. विश्व का सबसे बड़ा पठार कौन सा है?
10. भारत में मातृभाषा के तौर पर कितनी भाषाएं बोली जाती हैं?

पिछले अंक के उत्तर..

उत्तर : 1. फ्रांस, 2. ऊना, 3. कांगड़ा, 4. लाहौल-स्पीति, 5. गिरिराज, 6. शिमला, 7. शिमला, 8. क्रिकेट, 9. न्यूयार्क, 10. केलांग,

पहेली

1. वह क्या है जिसका आना भी खराब है और जाना भी खराब है?
2. रात में मैं रोती हूँ और दिन में सुकून से सोती हूँ। बताओ मैं कौन हूँ ?
3. ऐसी कौन सी चीज है जिसे हम दिन में कई बार उठाते हैं और कई बार रखते हैं?
4. वह क्या है जो पूरा कमरा भर देता है मगर जगह बिलकुल भी नहीं घेरता है?
5. वह कौन है जो सुबह से लेकर शाम तक सूरज की तरफ ही देखता रहता है?

उत्तर: आंख, मोमबत्ती, कदम, प्रकाश, सूरजमुखी

चुटकुले

1. पहले एक ने रैड लाइट जंप की,
पीछे से 5 और ने की।
पुलिस ने पहले को छोड़कर सभी का चालान काटा।
बाकियों ने पूछा: इसे क्यों छोड दिया?
इंस्पेक्टर: यह हमारा ही आदमी है ये वापस जाएगा रैड लाइट जंप करेगा और तुम जैसे 4-5 को फिर फंसवाएगा।
हमें भी टार्गेट पूरे करने होते हैं।।
2. गाँव के भोले लोग, शहर में एक शादी के रिसेप्शन में गए,
अंदर गये तो इतने सारे सलाद की आइटम देख कर बाहर आ गये,
बाहर आकर एक बोला: अभी तो सब्जी भी नहीं बनी है!!! कटी हुई धरी है !!

एम एस टी सी लिमिटेड
(भारत सरकार का उपक्रम) MSTC

MSTC LIMITED
(A Govt. of India Enterprise)

एमएसटीसी लि मि टे ड | भारत सरकार का उपक्रम

मिनीरत्न श्रेणी-I कंपनी
प्रशासनिक नियंत्रक
इस्पात मंत्रालय, भारत सरकार

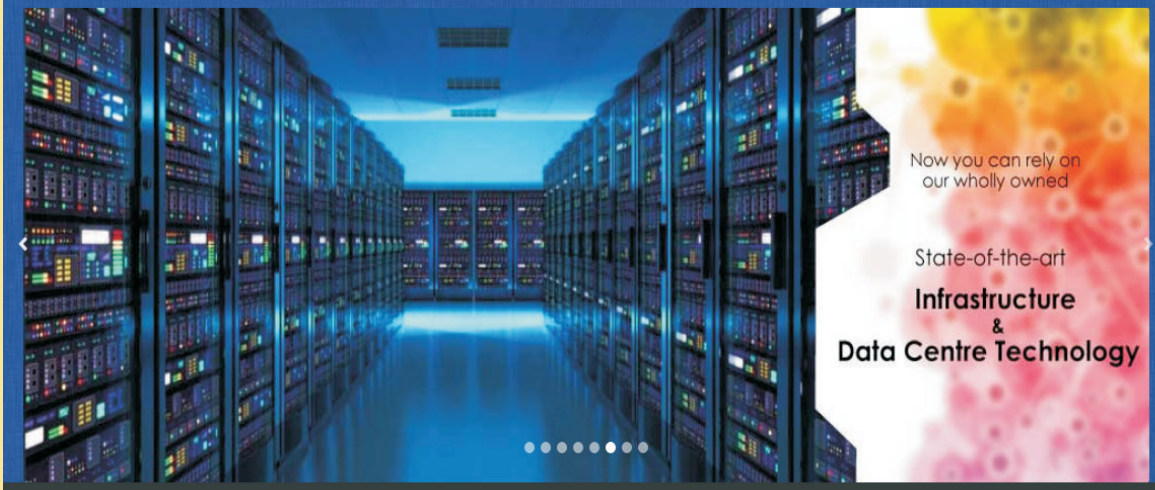

एमएसटीसी लिमिटेड भारत सरकार के इस्पात मंत्रालय के प्रशासनिक नियंत्रण के अधीन एक मिनीरत्न श्रेणी-I सार्वजनिक क्षेत्र का उपक्रम है । कंपनी की स्थारपना 6 लाख रु.के निवेश से 9 सितम्बतर,1964 को फेरस कूचा के निर्यात हेतु नियामक प्राधिकारी के रूप में कार्य करने के लिए की गयी थी । भारत सरकार, स्टीकल आर्क फर्नेश एसोसिएशन के सदस्योंय तथा आईएसएसएआई (ISSAI)के सदस्योंट द्वारा निवेश किया गया था ।

अधिक जानें

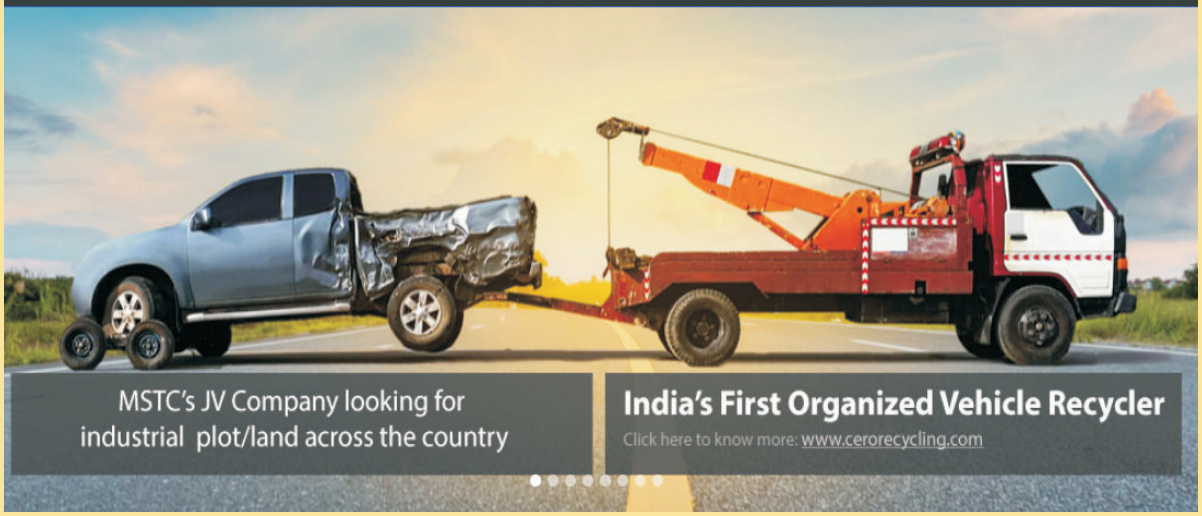

HP/48/SML (upto 31-12-2020) Pre Paid RNI No. HPHIN/2001/04280

Skill India
कौशल भारत-कुशल भारत

N·S·D·C
National
Skill Development
Corporation
Transforming the skill landscape

प्रधानमंत्री कौशल विकास योजना

प्रधानमंत्री कौशल विकास योजना (PMKVY) कौशल विकास एवं उद्यमिता मंत्रालय (MSDE) की प्रमुख योजना है। इस कौशल प्रमाणन योजना का उद्देश्य बड़ी संख्या में भारतीय युवाओं को उद्योग-संबंधित कौशल प्रशिक्षण लेने के लिए सक्षम करना है जो उन्हें बेहतर आजीविका हासिल करने में मदद करेगा। पहले से सीखे अनुभवी या कौशल वाले व्यक्तियों का भी पूर्व सीखने की मान्यता (RPL) के तहत मूल्यांकन किया जाएगा और उन्हें प्रमाणित किया जाएगा।

1 करोड़ युवाओं को लाभान्वित करने के लिए अगले चार वर्षों (2016-2020) के लिए स्वीकृत।

PMKVY
प्रधानमंत्री कौशल विकास योजना

प्रशिक्षण और आकलन शुल्क पूरी तरह से सरकार द्वारा प्रदत्त किया जाता है।

प्रधानमंत्री कौशल विकास योजना के तहत पेश किए गए विभिन्न क्षेत्रों में विभिन्न प्रशिक्षण कार्यक्रमों के विषय में जानने के लिए 08800055555 पर एक मिस्ड कॉल दें अथवा www.pmkvyofficial.org पर जानकारी प्राप्त करें।

मातृवन्दना

प्रकाशक एवं मुद्रक कमल सिंह सेन द्वारा मातृवन्दना संस्थान के लिए सवितार प्रैस, प्लॉट 820, फेस - 2, उद्योग क्षेत्र चंडीगढ़ से मुद्रित तथा डॉ. हेडगेवार भवन, नाभा, शिमला - 171004, से प्रकाशित।

हमें सम्पर्क करें YouTube